राजपाल

इक़बाल

और उनकी शायरी

सं. प्रकाश पंडित

जीवनी • ग़ज़लें • नज़्में • शे'र • रुबाइयां

हफ़ीज़ ... हिन्दोस्तानी ... -हफ़ीज़ जालन्धरी
न उर्दू न हिन्दी न हिन्दोस्तानी

यूहीं फ़िराक़ ने अ...

नया चश्मा है पत्थर के शिगाफ़ों से उबलने को
ज़माना किस क़दर बेताब है करवट बदलने ...
-सरदार जाफ़री

...जरूह

...निया ने तजुरबातो-हवादिस की शक्ल में
...जो कुछ मुझे दिया है वो लौटा रहा हूं मैं

उर्दू के लोकप्रिय शायर

इक़बाल

संपादक : प्रकाश पंडित

इक़बाल की ज़िन्दगी और उनकी बेहतरीन
ग़ज़लें, नज़्में और शे'र

राजपाल

मूल्य : पचास रुपये (Rs. 50.00)

संस्करण : 2006 © प्रकाशक
ISBN : 81-7028-214-4

IQBAL (Life-Sketch & Poetry of Iqbal)
Edited by Prakash Pandit

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

क्रम

हज़ारों साल नर्गिस[1] अपनी बेनूरी[2] पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर[3] पैदा

इक़बाल का यह शे'र संसार के अन्य महापुरुषों की तरह, जिन्होंने मनुष्य तथा मनुष्य की महानता के गीत गाए, तथा उसे पतन की दलदल से निकालकर आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा कर्म एवं संग्राम के पथ पर लगाने का प्रयत्न किया, स्वयं इक़बाल पर भी ठीक बैठता है। हज़ारों साल का दीर्घ विराम न सही, लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि 'दीदावर' बड़ी मुश्किल से पैदा होता है, और जब भी वह पैदा होता है दीर्घ विरामों की टूटी शृंखलाएं ज़ुड़ जाती हैं।

उर्दू और फ़ारसी शायरी के चमन का यह 'दीदावर' 1875 ई. में स्यालकोट (पंजाब) में पैदा हुआ। पुरखे कश्मीरी ब्राह्मण थे जिन्होंने तीन सौ वर्ष पूर्व इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया था और कश्मीर से निकलकर पंजाब में आ बसे थे। पिता शेख़ नूर मोहम्मद का स्यालकोट में छोटा-सा व्यवसाय था लेकिन सहृदयता और सत्कर्मों के कारण बड़ा नाम था। अता मोहम्मद और मोहम्मद इक़बाल दोनों पुत्रों को उन्होंने उर्दू, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी की उच्च शिक्षा दिलवाई। अता मोहम्मद

---

1. आँख की आकृति से मिलता-जुलता फूल 2. ज्योतिविहीनता 3. आँख रखने वाला (पारखी)।

इक़बाल से चौदह वर्ष बड़े थे, इसलिए शिक्षा समाप्त कर वे तो मशीनों के इंजीनियर बन गए, लेकिन मोहम्मद इक़बाल, जिन्हें मानव-मस्तिष्क का इंजीनियर बनना था, स्यालकोट से एफ़.ए. करने के बाद लाहौर के गवर्नमेंट कालेज में प्रविष्ट हो गए। स्यालकोट में उन्हें मौलवी सय्यद मीर हसन जैसे उस समय के माने हुए विद्वान से लाभान्वित होने का अवसर मिला था जिन्होंने उनके मन में पूर्वी साहित्य तथा अन्य विधाओं के प्रति विशेष आदर उत्पन्न कर दिया था। लाहौर पहुँचे तो प्रोफ़ेसर आर्नल्ड जैसे विख्यात दार्शनिक का पथ-प्रदर्शन प्राप्त हुआ। गुरु ने शिष्य की तीक्ष्ण बुद्धि और दार्शनिक प्रवृत्ति को भांप लिया और उसे पश्चिमी दर्शन-शास्त्र से पूरी तरह परिचित कराने में विशेष परिश्रम किया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ का वह काल राजनीतिक रूप से पूरे भारत का जागरण-काल था। पिछड़ी हुई मुसलमान जाति भी सर सय्यद, हाली आदि नेताओं के अनथक प्रयत्नों तथा 1857 ई. के विद्रोह के बाद की चालीस वर्षीय नूतन शिक्षा-दीक्षा के कारण परिस्थितियों को समझने और भारत की अन्य जातियों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के योग्य हो चुकी थी। राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र-प्रेम की आवश्यकता के वशीभूत हिन्दू और मुसलमान नेता अपने इतिहास का संपरीक्षण कर रहे थे। देश-भर में यह भावना जगाने का प्रयत्न किया जा रहा था कि हम उस समय भी सभ्य थे जब अंग्रेज़ गंवार थे। बाल गंगाधर तिलक जैसे हिन्दू नेताओं ने अपना नया कर्म-दर्शन गीता और वेदान्त से निकाला और सर सय्यद, अमीर अली (तथा बाद में इक़बाल) आदि मुसलमान नेताओं ने क़ुरान मजीद की नवीन व्याख्या की। धर्म को दोनों जातियों ने एक ढाल के रूप में इस्तेमाल करने का प्रयत्न किया जो उनके विचार में उन्हें पूँजीवाद तथा परतन्त्रता की भर्त्सनाओं से बचा सकती थी। अतीत की महानताओं की चर्चा अंग्रेज़ शासकों के सामने अपने हीनता भाव को कम करने के उद्देश्य

से की जाती थी।[1] इस राजनीतिक एवं सामाजिक जागरण से तथा सर सय्यद, हाली और शिबली के साहित्य-सम्बन्धी सुधारों से उर्दू के साहित्य क्षेत्र में भी पर्याप्त परिवर्तन हो रहा था। तसव्वुफ़ (भक्तिवाद) और इश्क़िया शायरी (प्रेम-काव्य) का उन्मूलन तो अभी नहीं हुआ था, लेकिन वह पहले जैसा धूम-धड़क्का भी न रहा था जिसने विद्रोह से पहले के लगभग समस्त उर्दू शायरों को अपने बाहुपाश में जकड़ रखा था। ग़ज़ल के साथ-साथ नज़्म (कविता) भी पनपने लगी थी, लेकिन एक नया काव्य-रूप होने के कारण अभी उसमें कलात्मक प्रौढ़ता और चिन्तनात्मक गहनता उत्पन्न न हो पाई थी। ऐसे समय में इक़बाल जैसा शायर क्षेत्र में आता है जिसके हाथों न केवल अपूर्ण रेखाचित्रों में रंग भरा गया बल्कि उर्दू शायरी धरती से उठकर आकाश तक जा पहुँची। निःसन्देह उर्दू भाषा ने 'ग़ालिब' के अतिरिक्त अभी तक इक़बाल से बड़ा शायर उत्पन्न नहीं किया।

इस सम्बन्ध में स्वर्गीय शेख़ अब्दुल क़ादिर बैरिस्टर-एट-लॉ, भूतपूर्व सम्पादक 'मख़ज़न' (पत्रिका) का यह कथन दिलचस्पी से ख़ाली न होगा कि :

"अगर मैं तनासख़ (आवागमन) का क़ायल होता तो ज़रूर कहता कि 'ग़ालिब' को उर्दू और फ़ारसी शायरी से जो इश्क़ था उसने उनकी रूह को अदम (परलोक) में जाकर भी चैन नहीं लेने दिया और मजबूर किया कि वह फिर किसी इन्सानी जिस्म में पहुँचकर शायरी के चमन की सिंचाई करे; और उसने पंजाब के एक गोशे में, जिसे स्यालकोट कहते हैं, दोबारा जन्म लिया और मोहम्मद इक़बाल नाम पाया।"

---

1. इस प्रकार के अतीतवाद से बाद में संकीर्णता उत्पन्न हुई और फिर इस प्रवृत्ति ने इतना भयंकर रूप धारण कर लिया कि इससे न केवल 'दो जातियों के सिद्धान्त' को हवा मिली बल्कि देश तक का विभाजन हो गया।

यों तो शायरी का शौक़ इक़बाल को स्कूल-जीवन ही में उत्पन्न हो चुका था और वे अपनी कविताएँ डाक द्वारा उर्दू के प्रसिद्ध शायर और उस्ताद 'दाग़' देहलवी को संशोधनार्थ भेजा करते थे, लेकिन वास्तविक रूप में उनकी शायरी की शुरुआत लाहौर आकर हुई। उस समय उनकी आयु बाईस वर्ष की थी जब मित्रों के आग्रह पर उन्होंने वहाँ के एक मुशायरे (कवि-सम्मेलन) में अपनी ग़ज़ल पढ़ी। उस मुशायरे में मिर्ज़ा अरशद गोरगानी भी थे जिनकी गणना उन दिनों चोटी के शायरों में होती थी। जब इक़बाल ने ग़ज़ल का यह शे'र पढ़ा :

मोती समझ के शाने-करीमी[1] ने चुन लिये
क़तरे जो थे मेरे अर्क़-इन्अफ़ाल[2] के

तो मिर्ज़ा अरशद तड़प उठे। बड़ी प्रशंसा की और कहा कि "मियां साहबज़ादे ! सुबहान अल्लाह, इस उम्र में यह शे'र !"

उसी उम्र में मिर्ज़ा 'दाग़' ने भी अपने प्रतिभाशाली शिष्य की रचनाएँ इन शब्दों के साथ वापस करनी शुरू कर दीं कि रचनाएं संशोधन की मोहताज नहीं हैं।

सन् 1899 में इक़बाल ने पंजाब विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम.ए. किया और कुछ समय तक ओरियंटल कालेज में और फिर गवर्नमेंट कालेज में प्रोफ़ेसर की हैसियत से काम करते रहे। और यही वह ज़माना था जब लाहौर के सीमित क्षेत्र से निकलकर उनकी शायरी की चर्चा पूरे भारत में पहुँची। पत्रिका 'मख़ज़न' उन दिनों उर्दू की सर्वोत्तम पत्रिका मानी जाती थी। उसके सम्पादक स्वर्गीय शेख़ अब्दुल क़ादिर 'अंजुमने-हिमायते-इस्लाम' के जल्सों में इक़बाल को नज़्में पढ़ते देख चुके थे और देख चुके थे कि उन दर्द-भरी नज़्मों को सुनकर उपस्थित सज्जनों की आँखों में आँसू आ जाते हैं। उन्होंने इक़बाल की नज़्मों को 'मख़ज़न'

1. दया की शान (भगवान) 2. पश्चात्ताप के कारण आए हुए पसीने के।

में विशेष स्थान देना शुरू किया। पहली नज़्म 'हिमालय' के प्रकाशन पर ही, जो अप्रैल 1901 के अंक में निकली, पूरा उर्दू-जगत् चौंक उठा। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से मांगें आने लगीं और सभाओं द्वारा प्रार्थनाएं की जाने लगीं कि उनके वार्षिक सम्मेलनों में वे अपनी नज़्मों के पाठ द्वारा लोगों को लाभान्वित करें। स्वर्गीय अब्दुल क़ादिर के कथनानुसार उन दिनों इक़बाल दिन-रात साहित्य-सम्मेलनों और बैठकों में व्यस्त रहते थे। प्रवृत्ति ज़ोरों पर थी। शे'र कहने पर आते तो एक-एक बैठक में अनगिनत शे'र कह डालते। उनके मित्र या शिष्य, जो भी पास होते, पेन्सिल-काग़ज़ लेकर लिखते जाते और वे अपनी धुन में कहते जाते। "मैंने उन दिनों उन्हें कभी काग़ज़-क़लम लेकर शे'र लिखते नहीं देखा। गढ़े-गढ़ाए शब्दों का एक दरिया या चश्मा उबलता मालूम होता था। अपने शे'र सुरीली आवाज़ में, तरन्नुम से (गाकर) पढ़ते थे। स्वयं झूमते थे, और औरों को झुमाते थे। यह विचित्र विशेषता है कि मस्तिष्क ऐसा पाया था कि जितने शे'र इस प्रकार ज़बान से निकलते थे, सब-के-सब दूसरे समय और दूसरे दिन उसी क्रम से मस्तिष्क में सुरक्षित होते थे।"

इक़बाल की शायरी का प्रारम्भ देश-प्रेम तथा साम्राज्य-विरोध की भावना से हुआ। आरम्भ-काल ही से वे ऐसी शायरी को व्यर्थ समझते थे जिसका उद्देश्य मानव-मंगल न हो और उस शायर पर धिक्कार भेजते थे जो जीवन की कठिनाइयों तथा परीक्षाओं से मुँह मोड़कर पलायनवाद में शरण लेता हो। उनके समीप शायर का कर्त्तव्य यह था कि प्रकृति के असीम धन में से जीवन और शक्ति का जो अंश उसे मिला है उसमें वह औरों को भी शामिल करे, यह नहीं कि उठाईगीर बनकर जो रही-सही पूंजी औरों के पास है उसे भी हथिया ले :

"अगरचे आर्ट के मुतअ़ल्लिक़ दो नज़रिये (दृष्टिकोण) मौजूद हैं : अव्वल यह कि आर्ट की ग़रज़ (उद्देश्य) महज़ हुस्न (सौंदर्य) का

अहसास (अनुभूति) पैदा करना है और दोयम यह है कि आर्ट से ज़िन्दगी को फ़ायदा पहुँचना चाहिए। मेरा ज़ाती ख़याल यह है कि आर्ट ज़िन्दगी के मातहत है। हर चीज़ को इन्सानी ज़िन्दगी के लिए वक़्फ़ होना चाहिए और इसलिए हर वह आर्ट जो ज़िन्दगी के लिए मुफ़ीद हो, अच्छा और जाइज़ है। और जो ज़िन्दगी के ख़िलाफ़ हो, जो इन्सानों की हिम्मतों को पस्त और उनके जज़बाते-आलिया (उच्च भावनाओं) को मुर्दा करने वाला हो, क़ाबिले-नफ़रत है और उसकी तरवीज (प्रसार) हुकूमत की तरफ़ से ममनू (निषिद्ध) क़रार दी जानी चाहिए।''

साहित्य में प्रयोगवाद के भी वे कट्टर विरोधी थे। ऐसी सुन्दर कलाकृति से क्या लाभ जिसमें केवल कला के चमत्कार दिखाए गए हों। भाषा कोई मूर्ति नहीं है जिसकी पूजा की जाए, बल्कि विचारों की अभिव्यक्ति का एक साधन है। विचारों के बिना साधन अपने-आप में कोई महत्व नहीं रखता। इन्हीं विचारों तथा दृष्टिकोणों पर उन्होंने अपनी शायरी की नींव रखी। लगभग आधी शताब्दी में फैली हुई उनकी शायरी इस बात की गवाह है कि वे जीवन-पर्यन्त इन्हीं कर्त्तव्यों का पालन करते रहे। अपनी शायरी के पहले काल अर्थात् 1905 तक की शायरी में उन्होंने :

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा

और

वतन की फ़िक्र कर नादां ! मुसीबत आने वाली है
तेरी बर्बादियों के मश्वरे हैं आसमानों में
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में

ऐसी देश-प्रेम में डूबी हुई तथा भारत की पराधीनता और दरिद्रता पर

ख़ून के आँसू रुलाने वाली नज़्मों की रचना की। भारत के चश्मों और पर्वतों, गाती हुई नदियों, लहलहाते हुए पुष्प-कुंजों और देश-प्रेम के प्रकाश से जगमगाते हुए धरती-आकाश का पुजारी बनकर उन्होंने नानक और चिश्ती, राम और रामतीर्थ का गुणगान किया और अबोध बालकों तक के मुंह में यह प्रार्थना डाली :

हो मेरे दम से युं ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत

अपनी शायरी के इस आरंभिक काल में उनका मानसिक क्षितिज देश-प्रेम तथा राष्ट्रवाद के (तंग) क्षेत्र तक सीमित था; और यदि उनकी मानसिक यात्रा इसी मंज़िल पर समाप्त हो जाती तो उनकी शायरी चिन्तन की नहीं केवल नई परम्परा की शायरी होकर रह जाती। वह विशालता तथा सार्वभौमता, सृष्टि तथा ब्रह्माण्ड की वे गूढ़ समस्याएँ और उनका समाधान[1] जो यूरोप-भ्रमण के बाद उनकी रचनाओं में उत्पन्न हुआ, हम तक न पहुँचता।

1905 में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जब आप यूरोप गये[2] तो वहाँ आपको एक नई दुनिया देखने को मिली। यूरोपियन सभ्यता में उन्हें गुण भी नज़र आए, लेकिन गुणों से अधिक दोष दिखाई दिए। विशेषकर यूरोपवालों की अन्य देशों तथा जातियों को दास बनाने की

1. जिनसे सैद्धान्तिक मतभेद तो हो सकता है लेकिन जिनकी प्रभावात्मकता से इन्कार करना सम्भव नहीं।
2. यूरोप के तीन वर्षीय निवास में आपने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र क्री डिग्री प्राप्त की। ईरान के दर्शन पर एक पुस्तक लिखी, जिसपर जर्मनी के म्यूनिख विश्वविद्यालय ने आपको डाक्टरेट की डिगरी प्रदान की। जर्मनी से वापस आकर आपने लन्दन में बैरिस्टरी की परीक्षा पास की। उन दिनों प्रोफ़ेसर आर्नल्ड भारत से वापस लन्दन जाकर लन्दन विश्वविद्यालय में अरबी के प्रोफ़ेसर नियुक्त हो चुके थे। उनके छुट्टी जाने पर छः मास तक आप उनके स्थान पर अरबी पढ़ाते रहे।

दुर्भावना, तथा छोटे-बड़े और काले-गोरे का भेद-भाव देखकर उनके हृदय पर गहरी चोट लगी। भारत में भारतवासियों की अंग्रेज़ों द्वारा हो दुर्दशा को वे पहले ही देख चुके थे और उन्हें जगाने का यथासम्भव प्रयत्न भी कर चुके थे। अब विशाल अध्ययन तथा विस्तृत निरीक्षण के बाद उनकी क़लम से :

दियारे-मग़रिब[1] के रहनेवालो खुदा की बस्ती दुकां नहीं है
खरा जिसे तुम समझ रहे हो, वो अब ज़रे-कम-अयार होगा
तुम्हारी तहज़ीब अपने ख़ंजर से आप ही खुदकशी करेगी
जो शाख़े-नाज़ुक[2] पे आशियाना बनेगा नापायदार[3] होगा

ऐसे शे'र निकलने लगे और उन्होंने गम्भीर समस्याओं पर विचार करना शुरू किया।

क्या सृष्टि के रहस्य को हम बच्चों का खेल कहकर टाल सकते हैं ? और यदि सचमुच यह बच्चों का ही खेल है तो पश्चिम में यह अधिक सफलता के साथ क्यों खेला जा रहा है ? पूर्वी देश क्यों केवल प्राचीन महानता और आध्यात्मिक विचारधारा पर सन्तुष्ट हैं ? यहाँ उनके सामने दर्शन और विज्ञान के नए मोड़ आए। 'डार्विन' की खोज, मात्र 'बुद्धि' को अपूर्ण प्रमाणित करने वाला 'कांट' का तर्क, 'हैगल', जो अनुकूलता-प्रतिकूलता (Opposites) को ही विश्व-विकास का नियम सिद्ध करता है, 'नत्शे' का 'तूफ़ानी अहं' का सिद्धान्त और 'बरगुसां' का अन्तर्ज्ञान को प्रदान किया हुआ नया महत्व इत्यादि दार्शनिक सिद्धान्त नए-नए पहलुओं से उनके सामने आए। कुछ सिद्धान्त उन्होंने मार्क्स और लेनिन से भी लिए। अब उन्होंने पूरे ब्रह्माण्ड को एक विशाल कैन्वेस के रूप में देखा। सत्य और तथ्य की तलाश उन्हें नए-नए रास्तों पर ले गई। एक पड़ाव से दूसरा पड़ाव। एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल। विभिन्न

1. पश्चिमी देशों के 2. कोमल टहनी 3. क्षण-भंगुर।

पथ-प्रदर्शकों के नेतृत्व में उन्होंने ब्रह्माण्ड के कोनोंखुदरों की सैर की। कल्पना की वादियों में वे बहुत दूर तक निकल गए, यहाँ तक कि उनकी कल्पना पर कोई भी सिद्धान्त पाबन्दी न लगा सका। कोई मंज़िल मंज़िल न रही। आगे बढ़ने और बढ़ते चले जाने की, सितारों से आगे और जहान देखने की उमंग और उत्सुकता उत्पन्न हुई और यहीं से उनकी शायरी में वह वेग, सौन्दर्य, प्रेरणा और दर्शन-सम्बन्धी गहनता पैदा हुई जो उससे पहले की उर्दू शायरी में कहीं नहीं मिलती और जिसके बिना हम आधुनिक उर्दू शायरी की—और विशेष रूप से प्रगतिशील शायरी की—कल्पना तक नहीं कर सकते। ये इक़बाल ही थे जिन्होंने सबसे पहले 'इंक़िलाब' (क्रान्ति) का प्रयोग राजनीतिक तथा सामाजिक परिवर्तन के अर्थों में किया और उर्दू शायरी को क्रान्ति का वस्तु-विषय दिया। पूँजीपति और मज़दूर , ज़मींदार और किसान, स्वामी और सेवक, शासक और पराधीन की परस्पर खींचातानी के जो विषय हम आज की उर्दू शायरी में देखते हैं, उन सबपर सबसे पहले इक़बाल ने ही क़लम उठाई थी और यही वे विषय हैं जिनसे उनके बाद की पूरी पीढ़ी प्रभावित हुई, और यह प्रभाव 'जोश' मलीहाबादी, 'फ़िराक़' गोरखपुरी, 'हफ़ीज़' जालंधरी, 'एहसान दानिश' इत्यादि राष्ट्रवादी, रोमांसवादी और क्रान्तिवादी शायरों से होता हुआ तथा अधिक स्पष्ट रूप धारण करता हुआ फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़', 'सरदार जाफ़री', 'साहिर' लुधियानवी, 'मख़दूम' मुहीउद्दीन, 'वामिक़' जौनपुरी जैसे आधुनिक काल के प्रगतिशील शायरों तक पहुँचा है।

1908 में यूरोप से वापस आकर इक़बाल स्थाई रूप से लाहौर में रहने लगे। कुछ समय तक प्रोफ़ेसरी करने के बाद हमेशा के लिए नौकरी छोड़ दी और बैरिस्टरी का स्वतन्त्र धंधा अपना लिया। इस काल में उन्होंने उर्दू की बजाय फ़ारसी में अधिक लिखा। फ़ारसी को उर्दू भाषा के स्थान पर विचार-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने का कारण

यह था कि ज्यों-ज्यों दर्शन-शास्त्र आदि विधाओं का उनका अध्ययन गहन होता गया और उन्हें गूढ़ विचारों के प्रकटीकरण की आवश्यकता अनुभव हुई तो उन्होंने देखा कि उर्दू भाषा का शब्द-भण्डार फ़ारसी के मुक़ाबले में बहुत कम है। कुछ लोगों का मत यह है कि उर्दू के स्थान पर फ़ारसी को अपना माध्यम बनाने में यह भावना निहित थी कि अब वे केवल भारत के लिए नहीं, संसार-भर के मुसलमानों के लिए शे'र कहना चाहते थे। कारण कुछ भी हो, वास्तविकता यह है कि फ़ारसी भाषा में शे'र कहने से उनका यश भारत से निकलकर न केवल ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, टर्की और मिश्र तक पहुँचा, बल्कि 'असरारे-ख़ुदी' (अहंभाव के रहस्य) पुस्तक की रचना और डॉक्टर निकल्सन के उसके अंग्रेज़ी अनुवाद से तो पूरे यूरोप और अमरीका की नज़रें इस महान भारतीय कवि की ओर उठ गईं। और कदाचित् इससे प्रभावित होकर अंग्रेज़ी सरकार ने उन्हें 'सर' की श्रेष्ठ उपाधि प्रदान की। (साहित्य-सेवा के फलस्वरूप टैगोर के अतिरिक्त केवल इक़बाल को ही भारत में यह सम्मान मिला।) 'असरारे-खुदी' से तो ख़ैर उनकी ख्याति को चार चाँद लगे ही, लेकिन चिन्तन की दृष्टि से उनकी अन्य फ़ारसी रचनाएँ 'असरारे-खुदी' से आगे जाती हैं। 'पयामे-मशरिक़' में, जो जर्मनी के महान कवि और विचारक 'गेटे' की रचना 'पश्चिमी प्रणाम' के उत्तर में लिखी गई थी, दर्शन-सम्बन्धी विचारों का बड़ा सुन्दर उल्लेख मिलता है। इसमें कुछ ऐसी गहन समस्याएं और उनका समाधान किया गया है जिसका उल्लेख इससे पूर्व इतने सरल तथा आकर्षक ढंग से नहीं हुआ था। सारांश इस रचना का यह है कि एक भूला-भटका शायर जन्नत में पहुँच जाता है। अपने विचारों में वह इतना डूबा हुआ है कि जन्नत की खूबसूरतियों की ओर आँख तक उठाकर नहीं देखता। जन्नत की हर हूर उसे देखती है और कहती है कि तू बड़ा विचित्र प्राणी है,

न तू शराब पीता है, न मेरी ओर देखता है! इसपर शायर उत्तर देता

है कि मेरा मन जन्नत में नहीं लगता। आकांक्षा की कसक मुझे कहीं चैन नहीं लेने देती। जब मैं किसी रूपवान को देखता हूँ जो बजाय इसके कि मैं उसके रूप की सराहना करूँ या उससे आनन्दित होऊँ मेरे मन में तुरन्त यह इच्छा उत्पन्न हो जाती है कि काश मैंने इससे अधिक रूपवान को देखा होता।

रूपवान से रूपवानतर और उत्तम से उत्तमतर देखने की यह आकांक्षा इक़बाल की एक और फ़ारसी रचना 'जावेदनामा' में और भी सुन्दर ढंग से सामने आती है। वास्तव में इक़बाल की यह रचना उसकी समस्त फ़ारसी रचनाओं में सर्वोत्तम है, और इसे निःसंकोच 'शाहनामा फ़िरदौसी', 'दीवाने-हाफ़िज़', 'मसनवी मौलाना रूम' और 'गुलिस्ताने सादी' ऐसी फ़ारसी की महान और अमर कलाकृतियों के साथ रखा जा सकता है। यदि यहाँ 'जावेदनामा' का उल्लेख ज़रा विस्तार से कर दिया जाए तो वह असंगत न होगा। इस अद्वितीय कलाकृति में इक़बाल ने प्राचीन भारतीय संस्कृति को बड़े आदर की दृष्टि से देखा है और दिखाया है कि वे वेदों-उपनिषदों तथा ऋषि-मुनियों के विचारों से किस प्रकार लाभान्वित हुए हैं। फ़ारसी के प्रसिद्ध दार्शनिक 'रूमी' की आत्मा के नेतृत्व में इक़बाल चन्द्रलोक, बुद्धलोक, शुक्रलोक, मंगललोक, शनिलोक इत्यादि आकाश-लोकों में पहुँचते हैं और ऋषि-मुनियों से विचार-विनिमय करते हैं। शिव से उनकी बातचीत का नमूना देखिए[1] :

"भारतीय गुरु (शिव) थोड़ी देर के लिए मौन हो गया।
फिर उसने मेरी ओर देखा और बड़ी उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से देखा।
उसने पूछा, "बुद्धि की मृत्यु क्या है ?' मैंने उत्तर दिया, 'चिन्तन

---

1. असुविधा न हो इसलिए फ़ारसी शे'रों के स्थान पर उनका अनुवाद दिया जा रहा है।

का त्याग।' उसने पूछा, 'मन की मृत्यु ?' मैंने कहा, 'चर्चा का त्याग।' उसने पूछा, शरीर क्या है ?' मैंने कहा, 'यह तो मार्ग की धूलि से उत्पन्न हुआ है।' उसने पूछा, 'प्राण ?' मैंने कहा, 'यह ब्रह्म का एक रहस्य है ?' उसने पूछा, 'मनुष्य ?' मैंने कहा, 'यह उसके रहस्यों में से एक रहस्य है।' उसने पूछा 'जगत् ?' मैंने कहा, 'विद्या और कला ?' मैंने कहा, 'ये केवल छिलका-मात्र अर्थात् बाह्य वस्तु हैं।' उसने कहा, इसका प्रमाण क्या है ?' मैंने कहा, 'प्रियतम का सामना करके इस सत्य को समझा जा सकता है।' उसने कहा, 'संसार के लोगों का धर्म-मत क्या है ?' मैंने कहा, 'केवल सुनी-सुनाई बात।' उसने कहा, 'ऋषियों का धर्म-मत क्या है ?' मैंने कहा 'दर्शन।'

''मेरी बातचीत से उसकी आत्मा विभोर हो उठी और उसने मुझपर हृदय में उतर जाने वाले तथ्य प्रकट कर दिए।''

और वे तथ्य इस प्रकार के थे :

''मूर्ति के सामने जाग्रत् हृदय वाला काफ़िर उस दीनदार से अच्छा है जो क़ाबे में सो रहा हो।''

बुद्धलोक में गौतम बुद्ध एक अति सुन्दर अप्सरा से यह कहते हुए मिलते हैं :

''पश्चिम वालों की बुद्धि और पूर्व वालों का दर्शन, ये सब बुतख़ाना हैं और बुतों की परिक्रमा करना व्यर्थ है। अपने-आपसे डर, इस जंगल से न डर जिसमें से तू गुज़र रही है। क्योंकि तू ही तू है और अन्य दोनों लोकों का अस्तित्व है ही नहीं। ग़ैब की दुनिया (अदृश्य लोक) से आगे निकल जा, क्योंकि यह सन्देह और संशय के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। संसार में रहना और संसार से मुक्ति पा लेना ही सब कुछ है। वह स्वर्ग जो परमात्मा तुझे पुरस्कार में दे देता है, न होने के समान है। हाँ, यदि तेरे

कर्म के बदले में तुझे स्वर्ग मिलता है तो वह अवश्य एक चीज़ है।''

भर्तृहरि से वार्तालाप होता है तो यह तथ्य निकलता है :

''हमने जो छोटे-छोटे भगवान बना डाले हैं, उनसे ऊँचा एक भगवान मौजूद है जो मन्दिरों और मस्जिदों से कहीं दूर है। वह माथा टेकना, जिसमें कर्मनिष्ठा का उत्साह सम्मिलित नहीं, शुष्क है और मनुष्य को कहीं भी नहीं ले जाता। जीवन तो, चाहे अच्छा हो चाहे बुरा, केवल कर्म ही कर्म है। मैं एक रहस्य की बात तुमसे खोलकर कहता हूँ और इसका ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को नहीं है। वह व्यक्ति भाग्यशाली है जिसने यह बात अपने हृदय-पट पर लिख ली है। यह जगत्, जोकि तू देख रहा है, ईश्वर का प्रभाव नहीं है, प्रत्युत यह जो चर्ख़ा है वह भी तेरा है और वह धागा भी तेरा है जो उसके चक्र पर चल रहा है। कर्म-विपाक-विधान के सामने सिर को झुका, क्योंकि नरक हो या इराफ़ हो (स्वर्ग और नरक के बीच का लोक) या स्वर्ग हो, ये सब कर्म ही के फल हैं।''

जीवन-दर्शन के सम्बन्ध में ही नहीं, इस रचना में देश के प्रति असीम प्रेम और पराधीनता के प्रति घोर घृणा भी मिलती है। मीर जाफ़र और सादिक़ जैसे देशद्रोही व्यक्तियों का उल्लेख इस रूप में मिलता है :

''नरक को उन्हें जलाने से भी घृणा थी। वहाँ मैंने दो शैतान देखे, जिन्होंने अपना शरीर पालने के लिए जाति की आत्मा का वध कर डाला था। जाफ़र बंगाल से और सादिक़ दकन से था। ये मानव जाति के लिए भी अभिशाप हैं, धर्म के लिए भी और देश के लिए भी। दोनों त्याज्य हैं, अप्रिय हैं, हताश हैं और हतभाग्य

हैं। उनके दुष्कर्मों तथा दुष्चरित्रता के कारण एक पूरी जाति में ख़राबी उत्पन्न हो गई—एक ऐसी जाति जिसने दूसरों को स्वाधीनता का सन्देश दिया था। उसका देश और उसका धर्म अपने-अपने स्थान से गिर गए। क्या तू नहीं जानता कि भारत भूमि, संसार के सहृदय प्राणियों की प्रिय भूमि, वह भूमि जिसकी शोभा तथा जिसकी प्रतिभा ने संसार को चमका दिया है, अभी तक धूलि और रक्त में लोट रही है। उसकी मिट्टी में पराधीनता का बीज किसने बोया ? यह उन्हीं दुष्ट, नीच आत्माओं के कुकर्मों का परिणाम है।''

''जावेदनामा' का उल्लेख ज़रा विस्तार से करने की आवश्यकता इसलिए अनुभव हुई क्योंकि इक़बाल के कतिपय अनभिज्ञ शत्रु इक़बाल की कुछ रचनाओं के उदाहरणों से उन्हें सम्प्रदायवादी तथा अधिकतर मुसलमान जाति को सम्बोधन करने के कारण एक कट्टर धर्म-प्रचारक सिद्ध करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि मौलिक रूप से इक़बाल पर इस्लाम धर्म का बहुत गहरा प्रभाव है और मुसलमानों के पतन को देखकर उनका दिल रो उठता था और वे अतीत के महिमा-गान द्वारा उन्हें आगे बढ़ने का सन्देश देते थे, और यह भी सही है कि आगे चलकर इक़बाल ने 'इस्लामी स्टेट' की उद्भावना भी दी, लेकिन जैसाकि कहा जा चुका है, इस प्रकार के विचारों की आधारशिला पूरी भारतीय जाति को जाग्रत् करने की भावना पर रखी गई थी। अन्यथा मुख्य रूप से इक़बाल के विचाराधीन मनुष्य और सृष्टि के परस्पर सम्बन्ध की वही सर्वकालिक समस्या रही है जिसपर प्रत्येक काल के महान कवि मनन करते रहे हैं। दान्ते ने मनन किया। मिल्टन ने मनन किया। टैगोर ने गीतांजलि में मनन किया। यह मनन-चिन्तन विश्वव्यापी समस्याओं का कोई भी समाधान प्रस्तुत करे, तथा हमें उससे कितना ही मतभेद क्यों न हो,

किन्तु एक सार्वभौम कृति की यह कहकर उपेक्षा नहीं की जा सकती कि उसमें केवल अमुक जाति को सम्बोधित किया गया है।

इक़बाल विचारक की हैसियत से

इक़बाल ने अपने चिन्तन को चूँकि तर्क के स्थान पर काव्य का लिबास पहनाया है, इसलिए किसी विचारक-कवि की जीवन-उद्भावना को समझना और दूसरों को समझाना आसान काम नहीं है। प्रत्यक्ष है कि इसके लिए विश्लेषण की आवश्यकता होती है, और विश्लेषण यदि तार्किक और वैज्ञानिक नियमों पर किया जाए तो काव्य पर इससे बड़ा अन्याय और कोई नहीं हो सकता। फिर कवि की हैसियत से इक़बाल का पद इतना ऊँचा है कि उनके चिन्तन पर कोई आलोचना उनकी कला के जादू को कम नहीं कर सकती।

प्राचीन-अर्वाचीन काल के लगभग सभी पूर्वी तथा पश्चिमी कवियों तथा दार्शनिकों का मत यह था कि मनुष्य को अपना अहंभाव बिल्कुल मिटा देना चाहिए—क्योंकि केवल इसी अवस्था में उसकी आत्मा शान्ति और मोक्ष प्राप्त कर सकती है। परिणामस्वरूप जिस जाति ने भी इस प्रकार के विचारों को अंगीकार किया वह अकर्मण्य तथा शिथिल हो गई। इक़बाल यदि साधारण मस्तिष्क के व्यक्ति होते तो अधिक-से-अधिक अपनी जाति के पतन पर आर्तनाद करके मौन हो जाते, या तसव्वुफ़ की छाया में शरण ले लेते, लेकिन इतिहास ने उनके लिए उच्च स्थान नियत कर रखा था। वे उस जीर्ण तथा पुरातन पथ पर नहीं चले। उन्होंने अपनी जाति के पतन तथा अवनति के कारण मालूम किए और अपनी बुद्धि के अनुसार उनका समाधान किया। एक भुने हुए तीतर को देखकर उन्होंने अरबी भाषा के प्रसिद्ध कवि अबुलअला मुअ़र्री (जो निरामिष-भोजी थे) की ज़बान से कहलवाया :

ऐ मुर्ग़के-बेचारा[1] ज़रा यह तो बता तू
तेरा वोह गुनह क्या था यह है जिसकी मुकाफ़ात[2]
अफ़सोस-सद-अफ़सोस[3] कि शाहीं[4] न बना तू
देखे न तेरी आंख ने फ़ितरत[5] के इशारे
तक़दीर के क़ाज़ी का यह फ़तवा है अज़ल[6] से
है जुर्मे-ज़ईफ़ी[7] की सज़ा मर्गे-मुफ़ाजात[8]

इक़बाल के समीप जीवित रहने का भेद 'शाहीं' (बनने) में है। तीतर बनने का परिणाम इसके अतिरिक्त दूसरा नहीं हो सकता कि लोग भूनकर खा जाएँ। और यही कारण है कि उन्होंने अपनी जाति को 'शाहीनी' का पाठ पढ़ाया और उन समस्त विचारों का विरोध किया जो 'शाहीं' बनने में बाधा डालते हों। मनुष्य को वे दमनकारी भाग्य के सामने शस्त्र डालने का सन्देश नहीं देते। प्रकृति की अंधी शक्तियों के सामने मनुष्य की विवशता पर क्रन्दन नहीं करते। उनका 'मर्दे-मोमिन' (पूर्ण मानव) दैवी शक्तियों के सामने अपनी दीनता-हीनता को स्वीकार नहीं करता बल्कि छाती तानकर उनका मुक़ाबला करता है :

अफ़लाक[9] से है उसकी हरीफ़ाना[10] कशाकश[11]
ख़ाकी[12] है मगर ख़ाक से आज़ाद है मोमिन[13]

यह द्वन्द्व ऐसे उच्च स्थान पर भी पहुँच सकता है जहाँ खुदा 'तक़दीर' के मामले में भी बंदे (मनुष्य) से परामर्श लेने के लिए विवश हो जाए :

---

1. भोले पक्षी 2. सज़ा 3. सौ बार अफ़सोस 4. बाज़ पक्षी 5. प्रकृति 6. अनादिकाल 7. निर्बल होने का अपराध 8. अकाल मृत्यु 9. आसमानों (दैवी शक्तियों) 10. प्रतिद्वन्द्वी के-सी 11. संघर्ष 12. पार्थिव (मिट्टी का पुतला) 13. पूर्ण मानव।

ख़ुदी[1] को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले
ख़ुदा बन्दे से ख़ुद पूछे, बता तेरी रज़ा[2] क्या है

इक़बाल का 'मर्दे-मोमिन' प्रकृति के हाथों में कोई निर्जीव मोहरा नहीं, वह प्रकृति को बदल सकता है और अपने अहंभाव के नशे से उन्मत्त हो खुदा के मुक़ाबले में अपनी श्रेष्ठता जतलाने में भी संकोच नहीं करता। फ़ारसी की एक नज़्म 'खुदा और इन्सान' के कुछ टुकड़े देखिए :

खुदा, इन्सान से :

मैंने मिट्टी और पानी से एक संसार बनाया
तूने मिश्र, तुर्की, ईरान और तातार बना लिए
मैंने धरती की छाती से लोहा उत्पन्न किया
तूने उससे तीर, ख़ंजर, तलवारें और नेज़े ढाल लिए
तूने हरी शाखाएँ काट डालीं और फैलते हुए पेड़ तोड़ गिराए
गाते हुए पक्षियों के लिए तूने पिंजरा बना डाले।

---

1. खुदी अर्थात् अहंभाव का आधार-सूत्र 'हेगल' का तत्व-दर्शन (Dialectics) है। पराधीन जाति का एक पात्र होने के कारण चूँकि यह दर्शन इक़बाल की प्रकृति के अत्यन्त अनुकूल था इसलिए यूरोप की इस चिंगारी को उठाकर उन्होंने इस्लामी दर्शन और परम्पराओं की सहायता से प्रज्वलित किया। अहंभाव को यद्यपि उन्होंने एक कल्पित तथा आध्यात्मिक सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया, परन्तु इसके सामने वे खुदा को भी तुच्छ समझते हैं और इसीके कारण जीवन को परिवर्तनशील बताकर स्थिरता को मृत्यु का दूसरा नाम देते हैं (और इस तरह इसकी भौतिक सत्ता को भी स्वीकार करते हैं) 2. मर्ज़ी।

इन्सान, खुदा से :

तूने, ऐ मेरे मालिक ! रात बनाई, मैंने दीये जलाए
तूने मिट्टी उत्पन्न की, मैंने उससे प्याले बनाए
तूने धरती को वन, पर्वत और मरुस्थल प्रदान किए
मैंने उनमें रंगीन फूल खिलाए, हंसती हुई वाटिकाएं सजाईं
मैं विष में तिर्याक़[1] बनाता हूँ और पत्थर से आईना
(ऐ मालिक ! सच-सच बता ! तू बड़ा है या मैं)

(अनुवाद)

लेकिन इसके विपरीत जब इक़बाल खुदा के हुजूरी में इबलीस (शैतान) के विद्रोह की प्रशंसा करते हैं और इबलीस और जिबरील (मुसलमानों के मतानुसार एक मशहूर फ़रिश्ता जो पैग़म्बरों तक खुदा के सन्देश पहुँचाता है) के वार्तालाप में इबलीस के मुँह से बड़े गौरव के साथ इस प्रकार के वाक्य कहलवाते हैं :

देखता है तू फ़क़त[2] साहिल से रज़्मे-ख़ैर-ओ-शर[3]।
कौन तूफ़ां के तमांचे खा रहा है, मैं कि तू ?
मैं खटकता हूँ दिले-यज़दां[4] में कांटे की तरह।
तू फ़क़त अल्लाह-हू ! अल्लाह-हू ! ! अल्लाह-हू ! ! !

तो हम यह सोचने पर विवश हो जाते हैं कि इक़बाल 'कर्म कर्म के लिए' और 'विद्रोह विद्रोह के लिए' मत के अनुयायी तो नहीं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि उनके समीप स्वस्थ और अस्वस्थ कर्म में कोई भेद न हो ? और इस स्थान पर पहुँचकर जब हम इस दृष्टिकोण से इक़बाल

---

1. विष-निवारक ओषधि 2. केवल 3. अच्छाई और बुराई की लड़ाई 4. खुदा के दिल में।

की समस्त रचनाओं का अवलोकन करते हैं और उनमें स्वस्थ तथा कल्याणकारी रचनाओं के साथ-साथ तैमूर और मुसोलिनी की प्रशंसाएँ पाते हैं तो हमारी नज़र में उनका कर्म-दर्शन अपनी उपयोगिता खो देता है। अफ़सोस कि इक़बाल कुछ सामयिक घटनाओं के कारण एक बहुत बड़ी ठोकर खा गए।

सबसे बड़ी ठोकर उन्होंने यह खाई कि उन्होंने कर्म तथा गति का प्रतीक 'शाहीं' को बनाया। 'शाहीं' एक ध्वंसात्मक पक्षी है जो जीवन उत्पन्न तो कम करता है, किन्तु बड़े पैमाने पर उसका नाश करने का अभ्यस्त है। 'शाहीनी' का सन्देश किसी जाति के लिए सामयिक रूप से भले ही हितकर हो लेकिन एक स्थाई जीवन-दर्शन की हैसियत से अत्यन्त हानिकारक है, और इसके दार्शनिक परिणाम तो और भी भयंकर हो सकते हैं। उदाहरणस्वरूप जब इक़बाल 'शाहीं' की शान में इस प्रकार के शे'र कहते हैं :

हमाम-ओ-कबूतर[1] का भूखा नहीं मैं
कि है ज़िंदगी बाज़ की ज़ाहिदाना[2]
झपटना, पलटना, पलटकर झपटना
लहू गर्म रखने का है इक बहाना[3]

तो ऐसा मालूम होता है कि वह अपने 'मर्दे-मोमिन' को किसी स्वस्थ कर्म के लिए नहीं उभार रहे बल्कि उसे हिंसावाद का पाठ पढ़ा रहे हैं। इक़बाल का यह शे'र भी इसी प्रसंग में आता है :

जो कबूतर पर झपटने में मज़ा है ऐ पिसर
वो मज़ा शायद कबूतर के लहू में भी नहीं

---

1. कबूतर, निरीह पक्षी 2. परहेज़गारी की 3. "युद्ध लहू गर्म रखने का एक बहाना है" (मुसोलिनी)।

लेकिन, जैसाकि स्वयं इक़बाल ने कहा है :

गाह[1] मेरी निगाहे-तेज़ चीर गई दिले-वजूद[2]
गाह उलझ के रह गई अपने तवाहमात में[3]

इक़बाल स्थान-स्थान पर 'तवाहमात' में उलझे हैं, निकले हैं, फिर उलझे हैं, और फिर निकले हैं। उक्त प्रकार के विचार, जिन्हें वे बड़े ठाट-बाट से प्रस्तुत करते हैं और विशेष महत्व देते हैं, उन्हीं विचारों का उन्मूलन भी जब उसी ठाट-बाट से करते हैं :

गर्माओ ग़ुलामों का लहू सोज़े-यक़ीं से
कुंजश्के-फ़रोमाया[4] को शाहीं[5] से लड़ा दो

और

उठा साक़िया पर्दा इस राज़ से
लड़ा दे ममोले[6] को शाहबाज़[7] से

तो हम देखते हैं कि उन्होंने अपना खोया हुआ स्थान नए सिरे से प्राप्त कर लिया है और वह ठोकर जो उन्होंने खाई थी (और जो विशेष परिस्थितियों में हर बड़ा आदमी खा सकता है) ठोकर-मात्र थी। यह सही है कि इस प्रकार की ठोकरों और मतभेदों के कारण कहीं इक़बाल की शायरी अत्यन्त सुन्दर और महान हो गई है और कहीं अत्यन्त अधःस्थल में चली गई है (विशेषतः उन स्थानों पर जहाँ उन्होंने अपने दर्शन की लपेट में समस्त भौतिक उन्नतियों, विधाओं, बुद्धि तथा विज्ञान को ले लिया है) लेकिन सामूहिक रूप से उनकी महानता में कोई अन्तर नहीं आता। समय की छलनी जब उनकी समस्त धारणाओं को छानेगी तो केवल श्रेयस्कर तत्व ही बाक़ी रहेंगे। इक़बाल को भी तो इसपर

---

1. कभी 2. सृष्टि का दिल 3. भ्रमों में 4. तुच्छ चिड़िया 5. बाज़ पक्षी।

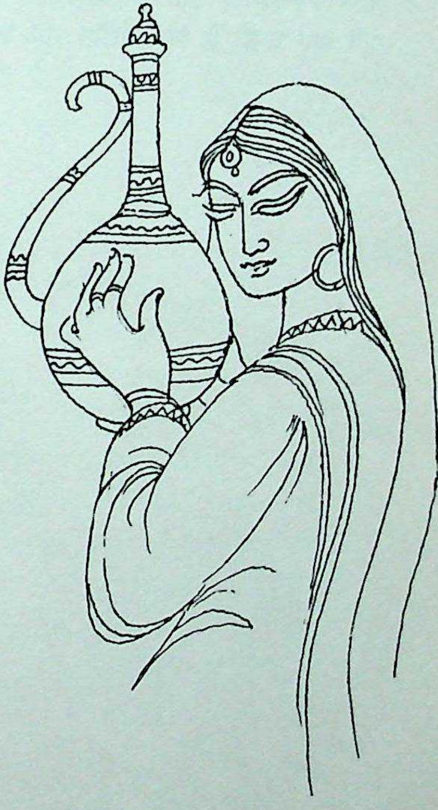
आग्रह नहीं था कि जब भी और जो कुछ भी उन्होंने कहा है उसे अन्तिम शब्द समझ लिया जाए :

> ''फ़ल्सफ़ियाना तफ़क्कुर (दर्शन-चिन्तन) में हर्फ़ेआख़िर (अन्तिम शब्द) कोई चीज़ नहीं है। ज्यों-ज्यों इल्म वसीअ़ (विशाल) होगा और ज़हनी और दिमाग़ी सलाहियतें (क्षमताएं) बढ़ेंगी दूसरे नज़रिये (सिद्धान्त) और ग़ालिबन बेहतर नज़रिये, दस्तयाब होंगे।''

21 अप्रैल, 1938 को उर्दू और फ़ारसी शायरी के चमन का यह 'दीदावर', जिसकी दृष्टि से चमन का कोई कोना, कोई फूल, कोई कांटा न बच सका, जो शायर भी था और दार्शनिक भी, जिसके यहाँ ताप भी है और मस्ती भी, बुद्धि तथा अनुराग की अनन्त छेड़छाड़ का वर्णन भी है और सौन्दर्य के चमत्कारों का चित्रण भी, जिसने प्राचीन तथा अर्वाचीन दर्शनशास्त्र, इस्लामी और ग़ैर-इस्लामी तसव्वुफ़ के तमाम पहलू, संसार की विभिन्न सभ्यताओं की जीवन-व्यवस्था, नैतिक सिद्धान्त, संस्कृति की नियमावली, व्यक्तिगत तथा सामूहिक व्यवहार के ढंग, तथा राजनीतिक प्रवृत्तियों इत्यादि समस्त विषयों को शे'र के वस्त्र पहनाए और सृष्टि के गूढ़ भेदों को प्रकट करने का यथासम्भव प्रयत्न किया, उर्दू तथा फ़ारसी भाषाओं में कई महान कलाकृतियों की सम्पत्ति छोड़कर इस संसार से उठ गया।

इक़बाल की छोड़ी हुई सम्पत्ति उर्दू शायरों की वर्तमान पीढ़ी का पथ-प्रदर्शन कर रही है, और निस्सन्देह आने वाली अनेकों पीढ़ियों का पथ-प्रदर्शन करेगी।

शायरी



.ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले
.ख़ुदा बन्दे से .ख़ुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है

यह चयन इक़बाल के चारों उर्दू कविता-संग्रहों 'बांगे-दरा', 'ज़र्बे-कलीम', 'बाले-जिब्रईल' और 'अरमुग़ाने-हिजाज़' में से स्वतन्त्र और संक्षिप्त रूप से किया गया है।

तराना-ए-हिन्द

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिस्तां[1] हमारा॥
गुरबत[2] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में।
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहां हमारा॥
परबत वो सबसे ऊँचा हमसाया आस्मां का।
वो संतरी हमारा, वो पासबां[3] हमारा॥
गोदी में खेलती हैं इसकी हज़ारों नदियां।
गुलशन[4] है जिनके दम से रश्के-जना[5] हमारा॥
ऐ आबे-रौदे-गंगा[6] ! वो दिन हैं याद तुझको।
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा॥
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा॥
यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रोमा सब मिट गए जहां से।
अब तक मगर है बाक़ी नामो-निशां हमारा॥
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-ज़मां[7] हमारा॥
'इक़बाल' ! कोई महरम[8] अपना नहीं जहां[9] में।
मालूम क्या किसी को दर्दे-निहां[10] हमारा॥

---

1. बाग़ 2. विदेश 3. रक्षक (चौकीदार) 4. बाग़ 5. स्वर्ग के लिए ईर्ष्या का कारण 6. गंगा नदी 7. संसार-चक्र 8. भेदी 9. संसार 10. आन्तरिक पीड़ा।

नया शिवालय

सच कह दूं ऐ बिरहमन ! गर तू बुरा न माने।
तेरे सनमकदों[1] के बुत हो गए पुराने॥
अपनों से बैर रखना तूने बुतों से सीखा।
जंगो-जदल[2] सिखाया वाइज़[3] को भी ख़ुदा ने॥
तंग आके मैंने आख़िर दैरो-हरम को[4] छोड़ा।
वाइज़ का वाज़ छोड़ा, छोड़े तेरे फ़साने[5]॥
पत्थर की मूरतों में समझा है तू ख़ुदा है।
ख़ाके-वतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है॥

आ ग़ैरियत[6] के पर्दे इक बार फिर उठा दें।
बिछड़ों को फिर मिला दें, नक़्शे-दुई[7] मिटा दें॥
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती।
आ इक नया शिवालय इस देस में बना दें॥
दुनिया के तीरथों से ऊँचा हो अपना तीरथ।
दामाने-आस्मां[8] से इसका कलश मिला दें॥
हर सुबह उठके गायें मंतर[9] वो मीठे-मीठे।
सारे पुजारियों को मय[10] पीत की पिला दें॥
शक्ति भी शान्ति भी भक्ति के गीत में है।
धरती के बासियों की मुक्ति परीत[11] में है॥

---

1. बुतख़ाना (मन्दिर) 2. युद्ध 3. इस्लामी उपदेशक 4. मन्दिर तथा काबे की चारदीवारी को 5. कहानियां 6. वैर-भाव 7. दुई के चिह्न 8. आकाश का दामन (आकाश) 9. मन्त्र 10. मदिरा 11. प्रीत।

तस्वीरे-दर्द

नहीं मिन्नत-कशे-ताबे-शनीदन[1] दास्तां मेरी।
खमोशी गुफ़्तगू है, बेज़बानी है ज़बां मेरी॥
यह दस्तूरे-ज़बांबन्दी[2] है कैसा तेरी महफ़िल में।
यहां तो बात करने को तरसती है ज़बां मेरी॥
उठाए कुछ वरक़[3] लाला ने, कुछ नर्गिस ने, कुछ गुल ने।
चमन में हर तरफ़ बिखरी हुई है दास्तां मेरी॥
उड़ा ली क़ुमरियों[4] ने, तूतियों[5] ने, अंदलीबों[6] ने।
चमन वालों ने मिलकर लूट ली तर्ज़े-फ़ुग़ां[7] मेरी॥
टपक ऐ शम्मअ़ ! आंसू बन के परवानों की आंखों से।
सरापा[8] दर्द हूं, हसरत-भरी हैं दास्तां मेरी॥
इलाही फिर मज़ा क्या है यहां दुनिया में रहने का।
हयाते-जाविदां[9] मेरी न मर्गे-नागहां[10] मेरी॥
मेरा रोना नहीं, रोना है ये सारे गुलिस्तां का।
वो गुल हूं मैं ख़िज़ां हर गुल की है गोया ख़िज़ां मेरी॥

☆ ☆ ☆

निशाने-बर्गे-गुल[11] तक भी न छोड़ा बाग़ में गुलचीं[12]।
तेरी क़िस्मत से रज़्म-आराइयां[13] हैं बाग़बानों में॥

---

1. सुनने की शक्ति की आभारी 2. ज़बान बन्द करने की प्रथा 3. पन्ने 4, 5, 6. बुलबुल इत्यादि पक्षी 7. आर्तनाद का ढंग 8. सिर से पैर तक 9. अमर जीवन 10. आकस्मिक मृत्यु 11. फूल की पत्ती का चिह्न 12. फूल चुननेवाला (माली) 13. झगड़े।

छुपाकर आस्तीं में बिजलियां रख दी हैं गर्दूं[1] ने।
अ़नादिल[2] बाग़ के ग़ाफ़िल न बैठें आशियानों में॥
सुन ऐ ग़ाफ़िल ! सदा[3] मेरी, यह ऐसी चीख़ है जिसको।
वज़ीफ़ा[4] जानकर पढ़ते हैं तायर[5] बोस्तानों[6] में॥
वतन की फ़िक्र कर नादां ! मुसीबत आने वाली है।
तेरी बरबादियों के मश्वरे हैं आस्मानों में॥
ज़रा देख उसको जो कुछ हो रहा है, होने वाला है।
धरा क्या है भला अहदे-कुहन[7] की दास्तानों में॥
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो !
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में॥

☆ ☆ ☆

हुवेदा[8] आज अपने ज़ख़्मे-पिनहाँ[9] करके छोड़ूँगा।
लहू रो रो के महफ़िल को गुलिस्तां करके छोड़ूंगा॥
जलाना है मुझे हर शम्मअ़-दिल[10] को सोज़े-पिनहां से[11]।
तेरी तारीक[12] रातों में चिराग़ां[13] करके छोड़ूंगा॥
पिरोना एक ही तसबीह[14] में इन बिखरे दानों को।
जो मुश्किल है तो इस मुश्किल को आसां करके छोड़ूंगा॥
जो है पर्दों में पिनहां, चश्मे-बीना[15] देख लेती है।
ज़माने की तबीयत का तकाज़ा देख लेती है॥

☆ ☆ ☆

1. आकाश 2. बुलबुल 3. आवाज़ 4. जाप 5. पक्षी 6. बाग़ों 7. पुराने ज़माने 8. प्रकट 9. छुपे घाव 10. दिल की शम्मअ 11. भीतरी अग्नि से 12. अंधियारी 13. दीप माला 14. माला 15. देखनेवाली आंख।

किया रफ़अ़त[1] की लज़्ज़त[2] से न दिल को आशना तूने।
गुज़ारी उम्र पस्ती में मिसाले-नक्शे-पा[3] तूने ॥
फ़िदा करता रहा दिल को हसीनों की अदाओं पर।
मगर देखी न इस आईने में अपनी अदा तूने ॥

☆ ☆ ☆

दिखा वो हुस्ने-आ़लम-सोज़[4] अपनी चश्मे-पुरनम[5] को।
जो तड़पाता है परवाने को, रुलवाता है शबनम को ॥
तेरा नज़्ज़ारा[6] ही ऐ बुल्हवस[7] ! मक़सद नहीं इसका।
बनाया है किसी ने कुछ समझकर चश्मे-आदम[8] को ॥
शजर[9] है फ़िर्क़ा-आराई[10] तअ़स्सुब[11] है समर[12] इसका।
ये वो फल है कि जन्नत से निकलवाता है आदम को ॥
फिरा करते नहीं मजरूह-ए-उल्फ़त[13] फ़िक्रे-दरमां[14] में।
ये ज़ख़्मी आप कर लेते हैं पैदा अपने मरहम को ॥

☆ ☆ ☆

बियाबाने-मोहब्बत[15] दश्ते-ग़ुरबत[16] भी, वतन भी है।
यह वीराना क़फ़स[17] भी, आशियाना भी, चमन भी है ॥
मोहब्बत ही वो मंज़िल है कि मंज़िल भी है सहरा भी।
जरस[18] भी, कारवां भी, राहबर[19] भी राहज़न[20] भी है ॥

---

1. बुलंदी 2. आनन्द 3. पदचिह्न की तरह 4. संसार को जलाने वाला सौन्दर्य 5. सजल नेत्र 6. देखना 7. लोलुप 8. मनुष्य की आंख 9. वृक्ष 10. साम्प्रदायिकता 11. विद्वेष 12. फल 13. प्रेम के घायल 14. चिकित्सा की तलाश 15. प्रेम का मरुस्थल 16. विदेश का बन 17. पिंजरा 18. घड़ियाल 19. पथ-प्रदर्शक 20. डाकू।

चाँद

मेरे वीराने से कोसों दूर है तेरा वतन।
है मगर दरिया-ए-दिल[1] तेरी कशिश[2] से मौजज़न[3]॥
क़स्द[4] किस महफ़िल का है ? आता है किस महफ़िल से तू ?
ज़र्द-रू[5] शायद हुआ रंजे-रहे-मंज़िल[6] से तू॥
आफ़रीनश[7] से सरापा नूर[8] तू, ज़ुल्मत[9] हूं मैं।
इस सियाह-रोज़ी[10] पे लेकिन तेरा हम-क़िस्मत[11] हूं मैं॥
एक हल्क़े[12] पर अगर क़ायम तेरी रफ़्तार है।
मेरी गर्दिश[13] भी मिसाले-गर्दिशे-परकार[14] है।
ज़िन्दगी की रह में सरगरदां[15] है तू हैरां हूं मैं।
तू फ़रोज़ा[16] महफ़िले-हस्ती में है, सोज़ां[17] हूं मैं॥
मैं रहे-मंज़िल में हूं, तू भी रहे-मंज़िल में है।
तेरी महफ़िल में जो ख़ामोशी है मेरे दिल में है॥
तू तलब-ख़ू[18] है तो मेरा भी यही दस्तूर है।
चाँदनी है नूर तेरा, इश्क़ मेरा नूर है॥

---

1. हृदय-सागर 2. आकर्षण 3. तरंगित 4. संकल्प 5. पीले मुख वाला 6. मंज़िल तक पहुंचने में मार्ग की थकान के कारण 7. सृष्टिकाल 8. सिर से पांव तक तू ज्योति है 9. अंधकार 10. दुर्भाग्य 11. एक-सा भाग्य रखने वाला 12. चक्र 13. भाग्य-चक्र 14. परकार (गोल चक्र खींचने वाला यन्त्र) [illegible] 15. घूम रहा है 16. ज्योतिर्मय 17. जल रहा 18. याचक।

अंजुमन[1] है एक मेरी भी जहां रहता हूं मैं।
बज़्म[2] में अपनी अगर यकता[3] है तू, तनहा हूं मैं॥
मेह्र[4] का परतौ[5] तेरे हक़ में है पैग़ामे-अज़ल[6]।
मह्व[7] कर देता है मुझको जल्वा-ए-हुस्ने अज़ल[8]
फिर भी ऐ माहे-मुबीं[9] ! मैं और हूं तू और है।
दर्द जिस पहलू में उठता हो वो पहलू और है॥
गर्चे मैं ज़ुल्मत-सरापा[10] हूं, सरापा नूर तू।
सैकड़ों मंज़िल है ज़ौक़े-आगही[11] से दूर तू॥
जो मेरी हस्ती का मक़सद है तुझे मालूम है।
ये चमक वो है, जबीं[12] जिससे तेरी महरूम[13] है॥

---

1. सभा 2. सभा 3. अद्वितीय 4. सूरज 5. प्रकाश 6. मृत्यु-सन्देश 7. लीन 8. अनादिकालीन सौन्दर्य की छवि 9. जाज्वल्यमान चाँद 10. सिर से पैर तक अंधकार 11. ज्ञान प्राप्त करने की अभिरुचि 12. माथा 13. वंचित।

एक आरज़ू

दुनिया की महफ़िलों से उकता गया हूं या रब !
क्या लुत्फ़ अंजुमन[1] का जब दिल ही बुझ गया हो ॥
शोरिश[2] से भागता हूं, दिल ढूंढ़ता है मेरा।
ऐसा सकूत[3] जिस पर तक़रीर भी फ़िदा हो ॥
मरता हूं ख़ामशी[4] पर, ये आरज़ू है मेरी।
दामन में कोह[5] के इक छोटा-सा झोंपड़ा हो ॥
आज़ाद फ़िक्र[6] से हूं, उज़्लत[7] में दिन गुज़ारूं।
दुनिया के ग़म का दिल से कांटा निकल गया हो ॥
लज़्ज़त[8] सरोद[9] की हो चिड़ियों के चहचहों में।
चश्मों की शोरिशों में बाजा-सा बज रहा हो ॥
गुल[10] की कली चटक कर पैग़ाम दे किसी का।
साग़र[11] ज़रा-सा गोया मुझको जहांनुमा हो ॥
हो हाथ का सिरहाना, सब्ज़ा[12] का हो बिछौना।
शरमाए जिससे जलवत[13] ख़लवत[14] में वो अदा हो ॥
मानूस[15] इस क़दर हो सूरत से मेरी बुलबुल।
नन्हे से दिल में उसके खटका न कुछ मेरा हो ॥

---

1. सभा 2. कोलाहल 3. चुप्पी (शान्ति) 4. चुप्पी 5. पहाड़ 6. चिन्ता 7. एकान्त 8. आनन्द 9. गीत 10. फूल 11. मद्य का प्याला 12. हरियाली (घास-पत्ते) 13. प्रत्यक्ष (सभा) 14. एकान्त 15. परिचित।

सफ़[1] बांधे दोनों जानिब[2] बूटे हरे-हरे हों।
नद्दी का साफ़ पानी तस्वीर ले रहा हो॥
हो दिल-फ़रेब[3] ऐसा कुहसार[4] का नज़ारा।
पानी भी मौज[5] बनकर उठ-उठके देखता हो॥
आग़ोश[6] में ज़मीं की सोया हुआ हो सब्ज़ा।
फिर-फिरके झाड़ियों में पानी चमक रहा हो॥
पानी को छू रही हो झुक-झुक के गुल[7] की टहनी।
जैसे हसीन कोई आईना देखता हो॥
महंदी लगाए सूरज जब शाम की दुल्हन को।
सुर्ख़ी लिए सुनहरी हर फूल की क़बा[8] हो॥
रातों को चलने वाले रह जाएं थक के जिस दम।
उम्मीद उनकी मेरा टूटा हुआ दिया हो॥
बिजली चमक के उनको कुटिया मेरी दिखा दे।
जब आसमां पे हर-सू[9] बादल घिरा हुआ हो॥
पिछले पहर की कोयल, वो सुबह की मुअज़्ज़िन[10]।
मैं उसका हमनवा हूं, वो मेरी हमनवा[11] हो॥
कानों पे हो न मेरे दैरो-हरम का अहसां।
रौज़न[12] ही झोंपड़ीं का मुझको सहरनुमा[13] हो॥

---

1. पंक्ति 2. ओर 3. मनमोहक 4. पर्वतमाला 5. लहर 6. गोद 7. फूल 8. वस्त्र 9. चारों ओर 10. बांग देने वाली (प्रातः हो जाने की सूचना देने वाली) 11. परस्पर बातचीत करने वाले 12. खिड़की 13. प्रातः हो जाने की सूचना देनेवाला।

फूलों को आए जिस दम शबनम वुज़ू[1] कराने।
रोना मेरा वुज़ू हो, नाला[2] मेरा दुआ हो॥
इस ख़ामशी में जाएं इतने बुलन्द नाले।
तारों के क़ाफ़िले को मेरी सदा[3] दिरा[4] हो॥
हर दर्दमन्द दिल को रोना मेरा रुला दे।
बेहोश जो पड़े हैं शायद उन्हें जगा दे॥

---

1. मुंह-हाथ धुलवाने 2. आर्तनाद 3. आवाज़ 4. घड़ियाल की आवाज़।

सरमाया व मेहनत

बंदा-ए-मजबूर को जाकर मेरा पैग़ाम दे।
ख़िज़्र[1] का पैग़ाम क्या है, यह पयामे-क़ायनात[2] ॥

ऐ कि तुझको खा गया सरमायादारे-हीलागर[3]।
शाख़े-आहू[4] पर रही सदियों तलक तेरी बरात[5] ॥

कट मरा नादां ख़याली देवताओं के लिए।
सुक्र[6] की लज़्ज़त में तू लुटवा गया नक़्दे-हयात[7] ॥

मक्र की चालों से बाज़ी ले गया सरमायादार।
इन्तिहा-ए-सादगी[8] में खा गया मज़दूर मात ॥

उठ कि अब बज़्मे-जहां[9] का और ही अंदाज़ है।
मशरिक़-ओ-मग़रिब में तेरे दौर[10] का आग़ाज़[11] है ॥

आफ़ताबे-ताज़ा[12] पैदा बतने-गेती[13] से हुआ।
आस्मां ! डूबे हुए तारों का मातम कब तलक ॥

तोड़ डाली फ़ितरते-इन्सां ने ज़ंजीरें तमाम।
दूरी-ए-जन्नत[14] से रोती चश्मे-आदम[15] कब तलक ॥

---

1. एक पैग़म्बर (पथ-प्रदर्शक) 2. जीवन प्रदान करने वाला संदेश 3. बहानों से लूटने वाला पूंजीपति 4. दोषपूर्ण शाख़ा 5. भाग्य में बंधा भाग 6. नशे 7. जीवन की नक़दी 8. अत्यन्त भोलेपन 9. संसार 10. युग 11. प्रारम्भ 12. नया सूरज 13. संसार की कोख 14. जन्नत की दूरी 15. मानव के नेत्र।

फ़ल्सफ़ा

अफ़कार[1] जवानों के ख़फ़ी[2] हों कि जली[3] हों।
पोशीदा[4] नहीं मर्दे-क़लंदर[5] की नज़र से॥
मालूम हैं मुझको तेरे अहवाल[6] कि मैं भी।
मुद्दत हुई गुज़रा था इसी राहगुज़र से॥
अल्फ़ाज़[7] के पेचों में उलझता नहीं दाना[8]।
ग़व्वास[9] को मतलब है सदफ़[10] से कि गुहर[11] से॥
पैदा है[12] फ़क़त हल्क़ा-ए-अरबाब-ए-जुनूं[13] में।
वो अक़्ल कि पा जाती है शो'ले को शरर[14] से॥
या मुर्दा है या नज़अ़ की हालत[15] में गिरफ़्तार।
जो फ़ल्सफ़ा लिक्खा न गया ख़ूने-जिगर से॥

---

1. चिन्तन 2. मद्धम 3. उज्जवल 4. छुपे हुए 5. स्वतन्त्र व्यक्ति 6. हालात 7. शब्दों 8. ज्ञानी 9. ग़ोताख़ोर (डुबकी लगाकर पानी में से चीज़ें निकालने वाला) 10. सीपी 11. मोती 12. पैदा हो सकती है 13. उन्मत्त मित्रों की चौकड़ी में 14. चिंगारी 15. अन्तिम श्वास ले रहा है।

चाँद और सितारे

डरते-डरते दमे-सहर[1] से।
तारे कहने लगे क़मर[2] से॥
नज़्ज़ारे रहे वही फ़लक[3] पर।
हम थक भी गये चमक-चमक कर॥
काम अपना है सुबह-ओ-शाम चलना।
चलना, चलना, मुदाम[4] चलना॥
बेताब है इस जहां की हर शै।
कहते हैं जिसे सकूं[5], नहीं है॥
होगा कभी ख़त्म यह सफ़र क्या ?
मंज़िल कभी आयेगी नज़र क्या ?
कहने लगा चांद, हमनशीनो[6] !
ऐ मज़रअ-ए-शब[7] के खोशाचीनो[8] !
जुंबिश[9] से है ज़िन्दगी जहाँ की।
यह रस्म क़दीम[10] है यहां की॥
इस रह में मुक़ाम[11] बेमहल[12] है।
पोशीदा[13] क़रार[14] में अज़ल[15] है॥
चलने वाले निकल गये हैं।
जो ठहरे ज़रा, कुचल गये हैं॥

---

1. प्रभात 2. चाँद 3. आकाश 4. निरन्तर 5. शान्ति 6. साथियो 7. रात की खेती 8. बालियां चुनने वालो 9. कर्म 10. प्राचीन 11. ठहरना 12. असंगत (व्यर्थ) 13. निहित 14. ठहराव 15. मृत्यु।

हक़ीक़ते-हुस्न

खुदा से हुस्न ने इक रोज़ यह सवाल किया।
जहां में क्यों न मुझे तूने लाज़वाल[1] किया ?
मिला जवाब कि तस्वीरख़ाना है दुनिया॥
शबे-दराज़[2] अ़दम[3] का फ़साना है दुनिया॥
हुई है रंगे-तग़य्युर[4] से जब नमूद[5] इसकी।
वही हसीं है हक़ीक़त ज़वाल[6] है जिसकी॥
कहीं क़रीब था ये गुफ़्तगू क़मर[7] ने सुनी।
फ़लक[8] पे आ़म हुई अख़्तरे-सहर[9] ने सुनी॥
सहर ने तारे से सुनकर सुनाई शबनम को।
फ़लक की बात बता दी ज़मीं के महरम[10] को॥
फिर आये फूल के आंसू पयामे-शबनम से।
कली का नन्हा-सा दिल ख़ून हो गया ग़म से॥
चमन से रोता हुआ मौसमे-बहार गया।
शबाब[11] सैर को आया था, सोगवार[12] गया॥

---

1. अमर 2. लम्बी रात 3. मृत्यु 4. परिवर्तनशीलता के रंग से 5. उत्पत्ति 6. मिटना 7. चाँद 8. आकाश 9. सुबह का तारा 10. भेदी 11. यौवन 12. उदास

फ़नूने-लतीफ़[1]

ऐ अहले-नज़र[2] ज़ौक़े-नज़र[3] ख़ूब है लेकिन।
जो शै की हक़ीक़त को न देखे वो नज़र क्या॥
जिससे दिले-दरिया मुतलातम[4] नहीं होता।
ऐ क़तरा-ए-नेसां[5] वो सदफ़[6] क्या वो गुहर[7] क्या॥
शायर की नवा[8] हो कि मुग़न्नी[9] का नफ़स[10] हो।
जिससे चमन अफ़सुर्दा[11] हो वो बादे-सहर[12] क्या॥

साक़ी

नशा पिलाके गिराना तो सबको आता है।
मज़ा तो जब है कि गिरतों को थाम ले साक़ी॥
जो बादाकश थे पुराने वो उठते जाते हैं।
कहीं से आबे-बक़ा-ए-दवाम[13] ले साक़ी॥
कटी है रात तो हंगामा-गुस्तरी[14] में तेरी।
सहर[15] क़रीब है अल्ला का नाम ले साक़ी॥

---

1. कोमल कलाएं 2. नज़र रखने वाले (पारखी) 3. तलाश की अभिरुचि 4. तरंगित 5. वर्षा की बूंद 6. सीपी 7. मोती 8. राग 9. गायक 10. श्वास (गीत) 11. उदास 12. प्रभात-समीर 13. अमृत 14. बिछौने के हंगामों में 15. सुबह।

फूल

तुझे क्यों फ़िक्र है ऐ गुल ! दिले-सदचाक[1] बुलबुल की।
तू अपने पैरहन[2] के चाक[3] तो पहले रफ़ू कर ले॥
तमन्ना आबरू की हो अगर गुलज़ारे-हस्ती[4] में।
तो कांटों में उलझकर ज़िन्दगी करने की ख़ू[5] कर ले॥
नहीं यह शाने-ख़ुद्दारी[6], चमन से तोड़कर तुझको,
कोई दस्तार[7] में रख ले, कोई ज़ेबे-गुलू[8] कर ले॥

फ़र्माने-ख़ुदा

(फ़रिश्तों से)

उट्ठो मेरी दुनिया के ग़रीबों को जगा दो।
काख़-ए-उमरा[9] के दरो-दीवार हिला दो।
गरमाओ ग़ुलामों का लहू सोज़े-यक़ीं से।
कुंजश्के-फ़रोमाया[10] को शाहीं[11] से लड़ा दो॥
सुलतानी-ए-जमहूर[12] का आता है ज़माना।
जो नक़्शे-कुहन[13] तुमको नज़र आये मिटा दो॥

---

1. विदीर्ण-हृदय 2. लिबास 3. छिद्र 4. संसार 5. स्वभाव 6. स्वाभिमान की शान 7. पगड़ी 8. गले की शोभा 9. अमीरों के महल 10. एक छोटी चिड़िया 11. बाज़ पक्षी 12. गण-राज्य 13. पुरातन (जीर्ण) चिह्न।

जिस खेत से दहक़ां[1] को मयस्सर नहीं रोज़ी।
उस खेत के हर ग़ोशा-ए-गंदुम को जला दो॥
मैं नाखुश-ओ-बेज़ार हूं मरमर की सिलों से।
मेरे लिए मिट्टी का हरम[2] और बना दो॥

गदाई

मैकदे में एक दिन एक रिंदे-ज़ीरक[3] ने कहा।
है हमारे शहर का वाली गदा-ए-बेहया[4]॥
ताज पहनाया है किसकी बेकुलाही[5] ने उसे॥
किसकी उरियानी[6] ने बख़्शी है इसे ज़र्री क़बा[7] ?
उसके आबे-लालागूं[8] की खूने-दहकां[9] से कशीद।
तेरे-मेरे खेत की मिट्टी है उसकी कीमिया॥
उसके ने'मतख़ाने[10] की हर चीज़ है मांगी हुई।
देने वाला कौन है ? मर्दे-ग़रीबो-बेनवा॥
माँगने वाला गदा है, सदक़ा मांगे या ख़िराज।
कोई माने या न माने मीर-ओ-सुलतां[11] सब गदा॥

1. किसान 2. काबे के इर्द-गिर्द का पवित्र प्रान्त 3. बुद्धिमान मद्यप 4. निर्लज्ज भिखमंगा 5. बिना टोपी के सर (निर्धनता) 6. नग्नता 7. स्वर्णिम वस्त्र 8. लाल पानी (शराब) 9. किसान के लहू 10. सुख-सामग्री रखने का घर 11. अमीर और बादशाह।

लाला-ए-सहरा*

यह गुंबदे-मीनाई[1], यह आ़लमे-तनहाई[2]।
मुझको तो डराती है इस दश्त[3] की पहनाई[4]॥
भटका हुआ राही मैं, भटका हुआ राही तू।
मंज़िल है कहां तेरी ऐ लाला-ए-सहराई॥
तू शाख़ से क्यों फूटा, मैं शाख़ से क्यों टूटा।
इक जज़्बा-ए-पैदाई[5], इक लज़्ज़ते-यकताई[6]॥
उस मौज के मातम में रोती है भंवर की आंख।
दरिया से उठी लेकिन साहिल से न टकराई॥
है गर्मी-ए-आदम[7] से हंगामा-ए-आ़लम[8] गर्म।
सूरज भी तमाशाई, तारे भी तमाशाई॥

---

* मरुस्थल का फूल

1. आकाश का गुंबद 2. एकांत की अवस्था 3. मरुस्थल 4. विशालता 5. उत्पन्न (प्रकट) होने की भावना 6. अनुपमता का आनन्द 7. मनुष्य की गर्मी (कर्म) 8. संसार का हंगामा।

फ़ल्सफ़ा-ए-ग़म

एक भी पत्ती अगर कम हो तो वो गुल[1] ही नहीं।
जो ख़िज़ां-नादीदा[2] हो बुलबुल वो बुलबुल ही नहीं॥
आरजू के खून से रंगीं है दिल की दास्तां।
नग़्मा-ए-इन्सानियत[3] कामिल[4] नहीं ग़ैर-अज़-फ़ुग़ां[5] ॥
ग़म जवानी को जगा देता है लुत्फ़े-ख़्वाब से।
साज़ यह बेदार होता है इसी मिज़राब[6] से॥

☆ ☆ ☆

शाम जिसकी आशना-ए-नाला-ए-'या-रब'[7] नहीं।
जल्वा-पैरा[8] जिसकी शब में अश्क[9] के कोकब[10] नहीं।
हाथ जिस गुलचीं[11] का है महफ़ूज़ नोके-ख़ार[12] से॥
इश्क़ जिसका बेख़बर है हिज्र[13] के आज़ाब[14] से॥
कुल्फ़ते-ग़म[15] गर्चे उसके रोज़ो-शब से दूर है।
ज़िन्दगी का राज़ उसकी आंख से मस्तूर[16] है॥

☆ ☆ ☆

---

1. फूल 2. पतझड़ न देखी हो 3. मानवता का संगीत 4. पूरा 5. बिना आर्तनाद के 6. उँगली में पहनने का छल्ला जिससे सितार बजाई जाती है 7. जो व्यक्ति शाम के समय 'हे भगवान' कहकर दुखित न हुआ 8. प्रदर्शित 9. आँसू 10. सितारे 11. फूल चुनने वाले 12. कांटे की नोक 13. जुदाई 14. कष्ट 15. ग़म का सन्ताप 16. छुपा हुआ।

रुख़सते-महबूब का मक़सद फ़ना होता अगर।
जोशे-उल्फ़त भी दिले-आशिक़ से कर जाता सफ़र॥
इश्क़ कुछ महबूब के मरने से मर जाता नहीं।
रूह में ग़म के बनके रहता है मगर जाता नहीं॥

☆ ☆ ☆

आती है नद्दी जबीने-कोह[1] से गाती हुई।
आस्मां के तायरों[2] को नग़्मा सिखलाती हुई॥
आईना रोशन[3] है उसकी सूरते-रुख़्सारे-हूर[4]।
गिरके वादी क़ी चटानों पर यह हो जाता है चूर॥
नहर जो थी उसके गौहर[5] प्यारे-प्यारे बन गए।
यानी इस उफ़्ताद[6] से पानी के तारे बन गए॥
जू-ए-सीमाबे-रवां[7] फटकर परेशां[8] हो गई।
मुज़्तरिब[9] बूंदों की इक दुनियां नुमायां[10] हो गई॥
पस्ती-ए-आलम[11] में मिलने को जुदा होते हैं हम।
आ़र्ज़ी फ़ुर्क़त को दायम[12] जानकर रोते हैं हम॥

---

1. पर्वत के माथे (शिखर) से 2. पक्षियों 3. प्रकाशमान 4. अप्सरा के कपोलों की तरह 5. मोती 6. दुर्घटना 7. बहते हुए पारे की नदी 8. छिन्न-भिन्न 9. व्याकुल 10. प्रकट 11. संसार के अधःस्थल 12. स्थायी।

मरने वाले मरते हैं लेकिन फ़ना होते नहीं।
ये हक़ीक़त में कभी हमसे जुदा होते नहीं॥
अक़्ल जिस दम दहर[1] की आफ़ात[2] में महसूर[3] हो।
या जवानी की अंधेरी रात में मस्तूर[4] हो॥
ख़िज़्रे-हिम्मत[5] हो गया हो आरज़ू से गोशागीर।
फ़िक्र जब आ़जिज़ हो और ख़ामोश आवाज़े-ज़मीर[6]॥
वादी-ए-हस्ती[7] में कोई हम-सफ़र तक भी न हो।
जादह[8] दिखलाने को जुगनू का शरर[9] तक भी न हो॥
मरने वाले की जबीं[10] रोशन है इस ज़ुल्मात[11] में।
जिस तरह तारे चमकते हैं अंधेरी रात में॥

☆ ☆ ☆

1. जगत 2. मुसीबतों 3. घिरी हुई 4. छुपी हुई 5. साहस का नेता 6. आत्मा की आवाज़ 7. संसार 8. छोटा मार्ग 9. चिंगारी (प्रकाश) 10. माथा 11. अंधकार।

ज़माना

जो था नहीं है, जो है न होगा, यही है एक हर्फ़े-मुजरिमाना[1]।
क़रीबतर है नमूद[2] जिसकी उसी का मुश्ताक़ है ज़माना॥
मेरी सुराही से क़तरा-क़तरा नए हवादिस[3] टपक रहे हैं।
मैं अपनी तसबीहे-रोज़ो-शब[4] का शुमार[5] करता हूँ दाना दाना॥
हर एक से आशना[6] हूं लेकिन जुदा-जुदा रस्मो-राह मेरी।
किसी का राकिब[7] किसी का मुरकिब[8], किसी को इबरत का ताज़ियाना[9]॥
न था अगर तू शरीके-महफ़िल क़ुसूर मेरा है या कि तेरा ?
मेरा तरीक़ा नहीं कि रख लूं किसी की ख़ातिर मये-शबाना[10]॥
हवाएं उनकी, फ़ज़ाएं उनकी, समन्दर उनके, जहाज़ उनके।
गिरह भंवर की खुले तो क्योंकर, भंवर है तकदीर का बहाना॥
जहाने-नौ[11] हो रहा है पैदा वो आ़लमे-पीर[12] मर रहा है।
जिसे फ़िरंगी मुक़ामिरों ने[13] बना दिया है क़मारख़ाना[14]॥
हवा है गो तेज़-ओ-तुंद लेकिन चिराग़ अपना जला रहा है।
वो मर्दे-दरवेश[15] जिसको हक़[16] ने दिये हैं अंदाज़े-खुस्रवाना[17]॥

---

1. अपराधपूर्ण शब्द 2. उत्पत्ति 3. दुर्घटनाएं 4. दिन-रात की माला 5. गणना 6. परिचित 7. सवार 8. सवारी 9. कोड़ा 10. रात की शराब 11. नया संसार 12. बूढ़ा ज़माना 13. जूएबाजों ने 14. जूआख़ाना 15. साधु 16. भगवान 17. बादशाही के अंदाज़।

शमॉ और शायर
(शमॉ–शायर से)

मुझको जो मौजे-नफ़स[1] देती है पैग़ामे-अजल[2]।
लब[3] उसी मौजे-नफ़स से है नवा-पैरा[4] तेरा॥
मैं तो जलती हूं कि है मुज़मिर[5] मेरी फ़ितरत[6] में सोज़[7]।
तू फ़रोज़ां[8] है कि परवानों को हो सौदा तेरा॥
यूँ तो रोशन है; मगर सोज़े-दरूं[9] रखता नहीं।
शो'ला है मिस्ले-चिराग़े-लाला-ए-सहरा[10] तेरा॥
सोच तू दिल में लक़ब[11] साक़ी का है ज़ेबा तुझे।
अंजुमन प्यासी है और पैमाना बे-सहबा[12] तेरा॥
क़ैस[13] पैदा हों तेरी महफ़िल में यह मुमकिन नहीं।
तंग है सहरा तेरा, महमिल[14] है बे-लैला तेरा॥

---

1. श्वास की लहर (श्वास) 2. मृत्यु-सन्देश 3. होंठ 4. गीत गाने वाला 5. निहित 6. प्रकृति 7. जलना 8. ज्योतिर्मय 9. भीतरी आग 10. मरुस्थल में उगे हुए फूल-रूपी दीपक की भांति 11. उपाधि (उपनाम) 12. शराब से ख़ाली 13. मजनूं 14. ऊँट पर कसने का कजावा जिसमें पर्दा डालकर स्त्रियाँ बैठती हैं।

था जिन्हें ज़ौक़े-तमाशा[1], वो तो रुख़सत हो गये।
लेके अब तू वादा-ए-दीदारे-आ़म[2] आया तो क्या॥
अंजुमन से वो पुराने शोला-आशाम[3] उठ गए।
साक़िया ! महफ़िल में तू आतिश-ब-जाम[4] आया तो क्या॥
आख़िरे-शब[5] दीद[6] के क़ाबिल थी बिस्मिल[7] की तड़प।
सुबह-दम कोई अगर बाला-ए-बाम[8] आया तो क्या॥

शम्मअ़-महफ़िल होके तू जब सोज़ से ख़ाली रहा।
तेरे परवाने भी इस लज़्ज़त से बेगाना[9] रहे॥
रिश्ता-ए-उल्फ़त[10] में जब इनको पिरो सकता था तू।
फिर परेशां क्यों तेरी तसबीह[11] के दाने रहे॥
शौक़े-बेपरवा[12] गया, फ़िक्रे-फ़लक-पैमा[13] गया।
तेरी महफ़िल में न दीवाने न फ़रज़ाने[14] रहे॥
ख़ैर, तू साक़ी सही, लेकिन पिलाएगा किसे ?
अब तो वो मैकश[15] रहे बाक़ी न मैख़ाने रहे॥
रो रही है आज इक टूटी हुई मीना उसे।
कल तलक गर्दिश में जिस साक़ी के पैमाने रहे॥

1. देखने की इच्छा (आकांक्षा) 2. आम दर्शनों का वायदा 3. आग पीने वाला शराबी 4. प्याले में आग लेकर 5. रात के अन्त समय 6. देखने 7. घायल 8. छत पर, अर्थात् दर्शन देने 9. वंचित 10. प्रेम का सम्बन्ध 11. माला 12. निश्चिन्त रहने का शौक 13. आकाश को नापने (उड़ानें भरने) का खयाल 14. बुद्धिजीवी 15. शराबी।

आज हैं ख़ामोश वो दश्ते-जुनूं-परवर[1] जहां।
रक़्स[2] में लैला रही, लैला के दीवाने रहे॥
वाए नाकामी[3] मता-ए-कारवां[4] जाता रहा।
कारवां के दिल से अहसासे-ज़ियां[5] जाता रहा॥

जिनके हंगामों से थे आबाद वीराने कभी।
शहर उनके मिट गये, आबादियां बन हो गईं॥

तू अगर .ख़ुद्दार है मिन्नतकशे-साक़ी[6] न हो।
ऐन[7] दरिया में हबाब-आसा-नगूं[8] पैमाना कर॥
कैफ़ियत बाक़ी पुराने कोहो-सहरा[9] में नहीं।
है जुनूं तेरा नया, पैदा नया वीराना कर॥

आशना[10] अपनी हक़ीक़त से हो ऐ दहक़ां[11] ज़रा।
दाना तू, खेती भी तू, बारां[12] भी तू, हासिल[13] भी तू॥
आह जिसकी जुस्तजू आवारा रखती है तुझे।
राह तू, रहरौ[14] भी तू, रहबर[15] भी तू, मंज़िल भी तू॥

---

1. उन्मादजनक मरुस्थल 2. नृत्य 3. हाय दुर्भाग्य 4. यात्री-दल का माल-असबाब 5. लुटने का अहसास 6. साक़ी का आभारी 7. ठीक (बीच) 8. पानी के बुलबुले की तरह टेढ़ा 9. वन-पर्वत 10. परिचित 11. किसान 12. वर्षा 13. फल 14. पथिक 15. पथ-प्रदर्शक।

कांपता है दिल तेरा, अन्देशा-ए-तूफ़ां से क्या।
नाखुदा[1] तू, बह्र[2] तू, कश्ती भी तू, साहिल भी तू॥
देख आकर कूचा-ए-चाके-गिरेबां[3] में कभी।
क़ैस तू, लैला भी तू, सहरा भी तू, महमिल भी तू॥
वाए नादानी! कि तू मोहताजे-साक़ी हो गया।
मय भी तू, मीना भी तू, साकी भी तू, महफ़िल भी तू॥
बेख़बर! तू जौहरे-आईना-ए-अय्याम[4] है।
तू ज़माने में खुदा का आख़िरी पैग़ाम है॥

ज़मीनो-आसमां

मुमकिन है कि तू जिसको समझता है बहारां[5]।
औरों की निगाहों में वो मौसम हो ख़िज़ां का॥
है सिलसिला अहवाल[6] का हर लमहा दिगरगूं[7]।
ऐ सालिके-रह[8] फ़िक्र न कर सूदो-ज़ियां[9] की॥
शायद कि ज़मीं है यह किसी और जहां की।
तू जिसको समझता है फ़लक[10] अपने जहां का॥

---

1. मांझी 2. सागर 3. फटे गिरेबान वालों की गली में (मजनूं की ओर संकेत है) 4. समय का सार 5. बसन्त ऋतु 6. परिस्थितियों (संसार) का 7. ख़राब 8. राही 9. लाभ-हानि 10. आकाश।

दुनिया

मुझको भी नज़र आती है यह बूक़लमूनी[1]।
वोह चांद, यह तारा है, वो पत्थर, यह नगीं[2] है॥
देती है मेरी चश्मे-बसीरत[3] यही फ़तवा[4]।
वो कोह[5] यह दरिया है वो गर्दूं[6] यह ज़मीं है॥
हक़[7] बात को लेकिन मैं छुपाकर नहीं रखता।
तू है, तुझे जो कुछ नज़र आता है नहीं है॥

फ़ल्सफ़ा और मज़हब

यह आफ़ताब[8] क्या यह सिपहरे-बरीं[9] है क्या।
समझा नहीं तसलसुले-शामो-सहर[10] को मैं॥
अपने वतन में हूं कि ग़रीब-उल-दियार[11] हूं ?
डरता हूं देख-देखके इस दश्तो-दर[12] को मैं।
खुलता नहीं मेरे सफ़रे ज़िंदगी का राज़।
लाऊं कहां से बंदा-ए-साहिब-नज़र[13] को मैं ?
हैरां है 'बूअली'[14] कि मैं आया कहा से हूं ?
'रूमी'[15] यह सोचता है कि जाऊं किधर को मैं ?
"जाता हूं थोड़ी दूर हर इक दहरौ[16] के साथ।
पह्चानता नहीं हूं अभी राहबर[17] को मैं॥"

---

1. रंगारंगी 2. हीरा 3. अंतर्दृष्टि, ज्ञानचक्षु 4. धर्मादेश 5. पर्वत 6. आकाश 7. वास्तविक 8. सूरज 9. ऊँचा आकाश 10. सुबह-शाम का अनुक्रम 11. परदेशी 12. मरुस्थल और दरवाज़ा 13. नज़र रखने वाला (पारखी) व्यक्ति 14. बूअला सेना (एक प्रसिद्ध दार्शनिक) 15. एक प्रसिद्ध ईरानी दार्शनिक 16. पथिक 17. पथ-प्रदर्शक।

परवाना और जुगनू

(परवाना)

परवाने की मंज़िल[1] से बहुत दूर है जुगनू।
क्यों अतिशे-बेसूद[2] पे मग़रूर है जुगनू॥

(जुगनू)

अल्लाह का सौ शुक्र कि परवाना नहीं मैं।
दरयूज़ागरे-अतिशे-बेगाना[3] नहीं मैं॥

मुल्ला और बहिश्त

मैं भी हाज़िर था वहां ज़ब्ते-सुख़न[4] कर न सका।
हक़[5] से जब हज़रते-मुल्ला को मिला हुक्म-बहिश्त[6]॥
अ़र्ज की मैंने इलाही मेरी तकसीर[7] मुआ़फ़।
खुश न आएंगे इसे हूरो-शराबो-लबे-किश्त॥
नहीं फ़िर्दौस[8] मुकामे-जलदो-कालो-अक़वाल[10]।
बहसो-तकरार इस अल्लाह के बन्दे की सरिश्त[11]॥
है बदआमोज़ी-ए-अकवामो-मलल[12] काम इसका।
और जन्नत में न मस्जिद, न कलीसा[13], न कनिश्त[14]॥

---

1. तक पहुँचने 2. व्यर्थ की आग 3. पराई आग का भिखारी 4. बात को ज़ब्त करना (बिना बोले न रह सका) 5. ईश्वर 6. स्वर्ग में जाने की आज्ञा 7. अपराध 8. उद्यान 9. स्वर्ग 10. लड़ाई-झगड़े, वाद-विवाद और उक्तियों की जगह 11. स्वभाव 12. विभिन्न जातियों की त्रुटियां गिनवाना 13. गिरजा 14. मन्दिर।

शिकवा

(केवल कुछ बंद)

है बजा[1] शेवा-ए-तस्लीम[2] में मशहूर हैं हम।
क़िस्सा-ए-दर्द सुनाते हैं कि मजबूर हैं हम॥
साज़े-ख़ामोश[3] हैं, फ़रियाद से मामूर[4] हैं हम।
नाला[5] आता है अगर लब[6] पे, तो माज़ूर[7] हैं हम॥
ऐ खुदा ! शिकवा-ए-अरबाबे-वफ़ा[8] भी सुन ले।
ख़ूगरे-हम्द[9] से थोड़ा-सा गिला भी सुन ले॥

हमसे पहले था अब तेरे जहां का मंज़र[10]।
कहीं मस्जूद[11] थे पत्थर, कहीं माबूद[12] शजर[13]॥
ख़गरे-पैकरे-महसूस[13] थी इन्सां की नज़र॥
मानता फिर कोई अनदेखे खुदा को क्योंकर॥

तुझको मालूम है—लेता था कोई नाम तेरा ?
क़ब्वते-बाज़ु-ए-मुस्लिम[14] ने किया काम तेरा॥

---

1. सही 2. भगवान की उपासना करने के स्वभाव 3. निस्तब्ध साज़ 4. भरे हुए 5. विलाप 6. होंठ 7. विवश 8. ईश्वर-भक्तों की शिकायत 9. स्तुति करने के अभ्यासी 10. दृश्य 11, 12. पूज्य 13. पेड़ 14. ईश्वर को साकार देखने की अभ्यस्त 15. मुसलमानों के बाहु-बल।

बस रहे थे यहीं सलजूक़[1] भी तूरानी[2] भी।
अहले-चीं चीन में, ईरान में सासानी[3] भी॥
इसी मामूरे[4] में आबाद थे यूनानी भी।
इसी दुनिया में यहूदी भी थे नसरानी थी॥
पर तेरे नाम पे तलवार उठाई किसने ?
बात जो बिगड़ी हुई थी वो बनाई किसने ?

थे हमीं एक तेरे मार्का-आराओं[5] में।
खुश्कियों में कभी लड़ते, कभी दरियाओं में॥
दीं अज़ानें कभी यूरुप के कलीसाओं में।
कभी अफ़्रीका के तपते हुए सहराओं में॥
शान आंखों में न जचती थी जहांदारों की।
कलमा पढ़ते थे हम छांव में तलवारों की॥

टल न सकते थे अगर जंग में अड़ जाते थे।
पांव शेरों के भी मैदां से उखड़ जाते थे।
तुझसे सरकश[6] हुआ कोई तो बिगड़ जाते थे।
तेग़[7] क्या चीज़ है ? हम तोप से लड़ जाते थे॥
नक़्स तौहीद[8] का हर दिल में बिठाया हमने।
फ़ेरे-ख़ंजर[9] भी ये पैग़ाम सुनाया हमने॥

1, 2, 3. जातियों के नाम 4. संसार 5. योद्धाओं 6. विरोधी 7. तलवार 8. एकेश्वरवाद 9. ख़ंजर के नीचे।

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक़्ते-नमाज़।
क़िबला-रू[1] होके ज़मीं-बोस[2] हुई क़ौमे-हिजाज़[3] ॥
एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूद-ओ-अयाज़[4]।
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा-नवाज़ ॥
बन्दा-ओ-साहिब-ओ-मोहताज-ओ-ग़नी एक हुए।
तेरी सरकार में पहुंचे तो सभी एक हुए ॥
सफ़ा-ए-दहर[5] से बातिल[6] को मिटाया हमने।
नौ-ए-इन्सां[7] को गुलामी से छुड़ाया हमने ॥
तेरे काबे को जबीनों[8] से बसाया हमने।
तेरे क़ुरआन को सीने से लगाया हमने ॥
फिर भी हमसे यह गिला है कि वफ़ादार नहीं।
हम वफ़ादार नहीं, तू भी तो दिलदार नहीं ॥
उम्मतें[9] और भी हैं, उनमें गुनहगार भी हैं।
इज़्ज़[10] वाले भी हैं, मस्ते-मै-पिन्दार[11] भी हैं ॥
उनमें काहिल भी हैं ग़ाफ़िल भी हैं हुशियार भी हैं।
सैकड़ों हैं कि तेरे नाम से बेज़ार भी हैं ॥
रहमतें हैं तेरी अग़ियार[12] के काशानों[13] पर।
बर्क़[14] गिरती है तो बेचारे मुसलमानों पर ॥

---

1. काबे की ओर मुंह करके 2. ज़मीन से लगकर (नमाज़ पढ़ने लगी) 3. अरब देश के एक भाग की जाति 4. बादशाह महमूद ग़ज़नवी और उसका दास अयाज़ (छोटे-बड़े) 5. युग के पन्ने (इतिहास) 6. झूठ 7. मानव-जाति 8. साष्टांग प्रणाम कर-करके 9. सम्प्रदाय 10. नम्रता 11. घमण्ड के नशे में चूर 12. परायों 13. महलों 14. बिजली।

यह शिकायत नहीं, हैं उनके ख़ज़ाने मामूर[1]।
नहीं महफ़िल में जिन्हें बात भी करने का शऊर[2] ॥
क़हर तो यह है कि काफ़िर को मिलें हूरो-क़सूर[3]।
और बेचारे मुसलमां को फ़क़त वादा-ए-हूर ॥
अब वो अल्ताफ़[4] नहीं, हम पे इनायात[5] नहीं।
बात यह क्या है कि पहली-सी मदारात[6] नहीं ॥

तेरी महफ़िल भी गई, चाहने वाले भी गये।
शब की आहें भी गईं, सुबह के नाले भी गये ॥
दिल तुझे दे भी गये, अपना सिला[7] ले भी गये।
आके बैठे भी न थे और निकाले भी गये ॥
आये उश्शाक[8] गये वादा-ए-फ़र्दा[9] लेकर।
अब उन्हें ढूंढ चिराग़े-रुख़े-ज़ेबा[10] लेकर ॥

---

1. भरे-पूरे 2. ढंग 3. हुरें और महल 4, 5. कृपाएं 6. आवभगत 7. पुरस्कार 8. आशिक़ 9. आगामी काल का वायदा 10. सुन्दर मुखड़े का चिराग़ (प्रकाश)।

जवाबे-शिकवा
(दो बंद)

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है।
पर नहीं, ताक़ते-परवाज़[1] मगर रखती है॥
... ...
... ...
जिनको आता नहीं दुनिया में कोई फ़न[2], तुम हो।
नहीं जिस क़ौम को परवा-ए-नशेमन[3], तुम हो॥
बिजलियाँ जिसमें हो आसूदा[4], वो ख़िरमन[5] तुम हो।
बेच खाते हैं जो असलाफ़[6] के मदफ़न[7], तुम हो॥
हो निको-नाम[8] जो क़ब्रों की तिजारत करके।
क्या न बेचोगे तो मिल जायें सनम[9] पत्थर के॥
मुनफ़अ़त[10] एक है इस क़ौम की, नुक़सान भी एक।
एक ही सबका नबी, दीन भी, ईमान भी एक॥
हरम-ए-पाक[11] भी, अल्लाह भी, क़ुरआन भी एक।
कुछ बड़ी बात थी होते जो मुसलमान भी एक ?
फ़िर्क़ाबंदी है कहीं, और कहीं ज़ातें हैं।
क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं ?

---

1. उड़ने की शक्ति 2. कला 3. घर की चिन्ता 4. संतुष्ट 5. खलिहान 6. बुज़ुर्गों 7. क़ब्रिस्तान 8. प्रसिद्ध 9. बुत (महमूद ग़ज़नवी की ओर संकेत है जिसने रुपये के प्रलोभन में न आकर सोमनाथ के मन्दिर की मूर्तियों का विध्वंस कर दिया था) 10. लाभ 11. पवित्र काबा।

साक़ीनामा

पिला दे मुझे वो मये-पर्दा-सोज़।
कि आती नहीं फ़स्ले-गुल[1] रोज़-रोज़॥
वो मय जिसमें है सोज़ो-साज़े-अज़ल[2]।
वो मय जिससे खुलता है राज़े-अज़ल॥
उठा साक़िया पर्दा इस राज़ से।
लड़ा दे ममोले[3] को शहबाज़[4] से॥
ज़माने के अंदाज़ बदले गये।
नया राग है साज़ बदले गये॥
पुरानी सियासत गिरी ख़्वार है।
ज़मीं मीरो-सुलतां से बेज़ार है॥
गया दौरे-सरमायादारी गया।
तमाशा दिखाकर मदारी गया॥
फ़रेबे-नज़र[5] है सकूनो-सबात[6]।
तड़पता है हर ज़र्रा-ए-क़ायनात[7]॥
ठहरता नहीं कारवाने-वजूद[8]।
कि हर लम्हा[9] है ताज़ा शाने-वजूद॥

---

1. वसन्त ऋतु 2. अनादिकालिक तपिश तथा सुख-सामग्री 3. एक छोटी चिड़िया 4. बाज़-पक्षी 5. नज़र का धोखा 6. शान्ति और स्थिरता (जड़ता) 7. सृष्टि का प्रत्येक कण 8. जीवन का कारवान 9. प्रतिक्षण।

समझता है तू राज़ है ज़िन्दगी।
फ़क़त[1] ज़ौक़े-परवाज़[2] है ज़िन्दगी॥
समझते हैं नादां इसे बेसबात[3]।
उभरता है मिट-मिट के नक्शे-हयात[4]॥
ज़माने को ज़ंजीरें-अय्याम[5] है।
दमों के उलट-फेर का नाम है॥
यह मौजे-नफ़स[6] क्या है, तलवार है।
खुदी[7] क्या है तलवार की धार है॥
खुदी क्या है राज़े-दरूने-हयात[8]।
खुदी क्या है बेदारी-ए-क़ायनात[9]॥
अज़ल[10] इसके पीछे अबद[11] सामने।
न हद इसके पीछे न हद सामने॥
किरन चांद में है, शरर[12] संग[13] में।
यह बे-रंग है डूब कर रंग में॥
खुदी का नशेमन[14] तेरे दिल में है।
फ़लक[15] जिस तरह आंख के तिल में है॥

---

1. केवल 2. उड़ने की अभिरुचि 3. नश्वर 4. जीवन-रेखाएँ 5. दिनों (समय) की ज़ंजीर 6. श्वास 7.. अहंभाव 8. जीवन का गुप्त भेद 9. सृष्टि का जागरण 10, 11. अनादि तथा अनन्त काल 12. चिंगारी (आग) 13. पत्थर 14. निवास-स्थान 15. आकाश।

जबरील-ओ-इबलीस[1]

जबरील :

हमदमे-देरीना ! कैसा है जहाने-रंगो-बू ?

[ऐ पुराने साथी ! रंग और सुगंधि का संसार अर्थात् मनुष्य-लोक कैसा है ?]

इबलीस :

सोज़-ओ-साज़-ओ-दर्द दाग़-ओ-जुस्तजू-ओ-आरज़ू।

[(यहाँ) दिल की तपिश, पीड़ा, चोटें, तलाश, आकांक्षाएं (हैं)]

जबरील :

हर घड़ी अफ़लाक[2] पर रहती है तेरी गुफ़्तगू।
क्या नहीं मुमकिन कि तेरा चाक दामन हो रफ़ू[3] ॥

इबलीस :

आह ऐ जबरील ! तू वाक़िफ़ नहीं इस राज़ से।
कर गया सरमस्त मुझको टूट कर मेरा सुबू[4] ॥
अब यहां मेरी गुज़र मुमकिन नहीं, मुमकिन नहीं।
किस क़दर ख़ामोश है यह आ़लमे-बे-काख़-ओ-कू[5] ॥

---

1. जबरील : रहमत (अनुकम्पा) के फ़रिश्ते का नाम। इबलीस। शैतान, पहले यह भी फ़रिश्ता था, लेकिन खुदा की अवज्ञा करने के दण्डस्वरूप शैतान बना। इसका काम मनुष्य को दुष्कर्मों में लगाना है 2. आकाश-लोकों 3. फटा दामन रफ़ू हो (तू दोषरहित हो) 4. शराब का मटका 5. जिसमें न गलियां हैं न महल।

जिसकी नोमीदी[1] में हो सोज़े-दरूने क़ायनात[2]।
उसके हक़ में तक़नतू[3] अच्छा है या लातक़नतू[4] ?

जबरील :

खो दिये इन्कार[5] से तूने मक़ामाते-बुलंद[6]
चश्मे-यज़दां[7] में फ़रिश्तों की रही क्या आबरू ?

इबलीस :

देखता है तू फ़क़त साहिल से रज़्मे-ख़ैर-ओ-शर[8]।
कौन तूफ़ां के तमांचे खा रहा है मैं कि तू॥
ख़िज़्र[9] भी बे-दस्तो-पा इलियास[10] भी बे-दस्तो-पा[11]।
मेरे तूफ़ां यम-ब-यम, दरिया-ब-दरिया, जू-ब-जू[12]॥
गर कभी ख़लवत[13] मयस्सर हो तो पूछ अल्लाह से।
क़िस्सा-ए-आदम[14] को रंगी कर गया किसका लहू ?
मैं खटकता हूं दिले-यज़्दां[15] में कांटे की तरह।
तू फ़क़त अल्लाह-हू ! अल्लाह-हू ! ! अल्लाह-हू[16] ! !

---

1. निराशा 2. ब्रह्माण्ड में तपिश (चहल-पहल) 3, 4. निराश मत हो, निराश हो जाओ 5. अवज्ञा 6. उच्च स्थान 7. ख़ुदा की नज़र में 8. अच्छाई और बुराई की जंग 9, 10. पथ-प्रदर्शक पैग़म्बरों के नाम 11. बिना हाथ-पांव के (विवश) 12. हर नदी-नाले में 13. एकान्त 14. मावन-कथा 15. ख़ुदा के दिल में 16. अल्लाह वही है, वही है, वही है।

बच्चों के लिए
(बच्चे की दुआ)

लब[1] पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी।
ज़िन्दगी शम्मअ़ की सूरत[2] हो खुदाया मेरी॥
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए।
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए॥
हो मेरे दम से युंही मेरे वतन की ज़ीनत।
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत॥
ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब।
इल्म[3] की शम्मअ़ से हो मुझको मोहब्बत यारब॥
हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना।
दर्द-मन्दों से, ज़ईफ़ों[4] से मोहब्बत करना॥
मेरे अल्लाह ! बुराई से बचाना मुझको।
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको।

1. होंठ 2. दीपक की तरह 3. विद्या, ज्ञान 4. दुखियों तथा बूढ़ों से।

परिंदे की फ़रियाद

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना।
वो बाग़ की बहारें वो सबका चहचहाना॥
आज़ादियां कहां वो अब अपने घोंसले की।
अपनी ख़ुशी से आना अपनी ख़ुशी से जाना॥
लगती है चोट दिल पर, आता है याद जिस दम।
शबनम के आंसुओं पर कलियों का मुस्कराना॥
वो प्यारी-प्यारी सूरत वो कामनी-सी मूरत।
आबाद जिसके दम से था मेरा आशियाना॥
आती नहीं सदाएं उसकी मेरे क़फ़स में।
होती मेरी रिहाई ऐ काश! मेरे बस में॥
क्या बदनसीब हूं मैं घर को तरस रहा हूं।
साथी तो हैं वतन में, मैं क़ैद में पड़ा हूं॥
आई बहार कलियां फूलों की हंस रही हैं।
मैं इस अंधेरे घर में क़िस्मत को रो रहा हूं॥
इस क़ैद का इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊं।
डर है यहीं क़फ़स में मैं ग़म से मर न जाऊं॥
जब से चमन छुटा है यह हाल हो गया है।
दिल ग़म को खा रहा है, ग़म दिल को खा रहा है॥
गाना इसे समझकर ख़ुश हों न सुनने वाले।
दुखते हुए दिलों की फ़र्याद यह सदा है॥
आज़ाद मुझको कर दे ओ क़ैद करने वाले।
मैं बेज़बान क़ैदी, तू छोड़कर दुआ ले॥

ग़ज़लें

कोई शोख़ी तो देखे जब ज़रा रोना थमा मेरा
कहा बेदर्द ने क्यों आपने माला पिरो ली है
जफ़ाजू[1] कह दिया मैंने मगर तुमने बुरा माना
ख़फ़ा क्यों हो गये, यह आशिकों की बोली-ठोली है
शबे-फ़ुर्क़त[2] तसव्वुर[3] था मेरा, एजाज़[4] था, क्या था
तेरी तस्वीर को मैंने बुलाया है तो बोली है
वो मेरी जुस्तजू[5] में फिर रहे हैं, ख़ैर हो या रब
पता मेरा बताने को क़यामत[6] साथ हो ली है
समझ सकता न था कोई मुझे इस बज़्मे-हस्ती[7] में
गिरह थी ज़िन्दगी मेरी अज़ल[8] ने आके खोली है
महो-खुरशीदो-अंजुम[9] दौड़ते हैं साथ-साथ उसके
फ़लक[10] क्या है, किसी माशूक़े-बेपरवा की टोली है

☆ ☆ ☆

1. ज़ालिम 2. जुदाई की रात 3. कल्पना 4. चमत्कार 5. तलाश 6. प्रलय 7. संसार 8. मृत्यु 9. चाँद, सूरज, तारे 10. आकाश।

गुलज़ारे-हस्तो-बूद[1] न बेगानावर[2] देख
है देखने की चीज़ इसे बार-बार देख
आया है तू जहां में मिसाले-शरार[3] देख
दम दे न जाए हस्ती-ए-नापायदार[4] देख
माना कि तेरी दीद[5] के क़ाबिल नहीं हूं मैं
तू मेरा शौक देख, मेरा इन्तज़ार देख

☆ ☆ ☆

न आते, हमें इसमें तकरार क्या थी
मगर वादा करते हुए आ़र[6] क्या थी
तुम्हारे पयामी ने सब राज़ खोला
ख़ता[7] इसमें बन्दे की सरकार क्या थी

☆ ☆ ☆

लाऊं वो तिनके कहां से आशियाने के लिए
बिजलियां बेताब हों जिनको जलाने के लिए
वाए[8] नाकामी फ़लक[9] ने ताककर तोड़ा उसे
मैंने जिस डाली को तोड़ा आशियाने के लिए
दिल में कोई इस तरह की आरज़ू पैदा करूं
लोट जाये आसमां मेरे मिटाने के लिए
पास[10] था नाकामी-ए-सय्याद[11] का ऐ हमसफ़ीर[12]।
वर्ना मैं, और उड़के आता एक दाने के लिए ?

---

1. अस्तित्व की वाटिका (संसार) को 2. उदासीन दृष्टि से 3. चिंगारी की तरह 4. नश्वर जीवन 5. दर्शन 6. दोष (लज्जा) 7. क़सूर 8. अफ़सोस 9. आकाश (प्रारब्ध) 10. ख़याल 11. शिकारी की असफलता 12. साथी

☆ ☆ ☆

अनोखी वज़अ़[1] है सारे ज़माने से निराले हैं
ये आ़शिक़ कौन-सी बस्ती के या रब रहने वाले हैं
इलाजे-दर्द में भी दर्द की लज़्ज़त पे मरता हूं
जो थे छालों में कांटे नोके-सोज़ा[2] से निकाले हैं
फला-फूला रहे यारब चमन मेरी उमीदों का
जिगर का खून दे-देकर ये बूटे मैंने पाले हैं
न पूछो मुझसे लज़्ज़त ख़ानुमाँ-बरबाद[3] रहने की
नशेमन[4] सैकड़ों मैंने बनाकर फूंक डाले हैं
उमीदे-हूर ने सब कुछ सिखा रक्खा है वाइज़ को
ये हज़रत देखने में सीधे-सादे भोले-भाले हैं
नहीं बेगानगी अच्छी रफ़ीक़े-राहे-मंज़िल[5] से
ठहर जा ऐ शरर[6] ! हम भी तो आख़िर मिटने वाले हैं

☆ ☆ ☆

महीने वस्ल[7] के घड़ियों की सूरत[8] उड़ते जाते हैं
मगर घड़ियां जुदाई की गुज़रती हैं महीनों में
मुझे रोकेगा तू ऐ नाखुदा[9] ! क्या ग़र्क़ होने से
कि जिनको डूबना है डूब जाते हैं सफ़ीनों[10] में

---

1. रंग-ढंग 2. सुई की नोक 3. नष्ट घर में 4. नीड़ 5. सहयात्री 6. चिंगारी
7. मिलन 8. तरह 9. मांझी 10. नौकाओं में।

सरापा[1] हुस्न बन जाता है जिसके हुस्न का आशिक़
भला ऐ दिल ! हसीं ऐसा भी है कोई हसीनों में
बुरा समझूं उन्हें मुझसे तो ऐसा हो नहीं सकता
कि मैं खुद भी तो हूं 'इक़बाल' अपने नुक्ताचीनों[2] में

☆ ☆ ☆

तेरे इश्क़ की इन्तिहा चाहता हूं
मेरी सादगी देख क्या चाहता हूं
सितम[3] हो कि हो वादा-ए-बेहिजाबी[4]
कोई बात सब्र-आज़मा[5] चाहता हूं
यह जन्नत मुबारिक रहे ज़ाहिदों[6] को
कि मैं आपका सामना चाहता हूं
कोई दमका मेहमां हूं ऐ अहले-महफ़िल
चिराग़े-सहर[7] हूं बुझा चाहता हूं
भरी बज़्म में राज़ की बात कह दी
बड़ा बेअदब हूं, सज़ा चाहता हूं

☆ ☆ ☆

सख़्तियां करता हूं दिल पर, ग़ैर से ग़ाफ़िल हूं मैं
हाए क्या अच्छी कही ज़ालिम हूं मैं जाहिल हूं मैं
है मेरी ज़िल्लत ही कुछ मेरी शराफ़त की दलील
जिसकी ग़फ़लत को मलक[8] रोते हैं वो ग़ाफ़िल हूं मैं

---

1. सिर से पैर तक 2. आलोचकों 3. अत्याचार 4. पर्दा हटाने का वादा 5. धैर्य को आज़माने वाली 6. संयमियों 7. प्रभात-दीपक 8. फ़रिश्ते।

बज़्मे हस्ती ! अपनी आराइश[1] पे तू नाज़ां[2] न हो
तू तो इक तस्वीर है महफ़िल की और महफ़िल हूं मैं
ढूंढ़ता फिरता हूं ऐ 'इक़बाल' अपने-आप को
आप ही गोया मुसाफ़िर आप ही मंज़िल हूं मैं

☆ ☆ ☆

मजनूं ने शहर छोड़ा तो सहरा भी छोड़ दे
नज़्ज़ारे की हवस[3] है तो लैला भी छोड़ दे
वाइज़[4] ! कमाले तर्क[5] से मिलती है यां मुराद
दुनिया जो छोड़ दी है तो उकबा[6] भी छोड़ दे
तक़लीद[7] की रविश[8] से तो बेहतर है खुदकुशी
रस्ता भी ढूँढ, खिज़्र[9] का सौदा भी छोड़ दे
है आशिक़ी' में रस्म अलग सबसे बैठना
बुतख़ाना भी, हरम भी, कलीसा भी छोड़ दे
सौदागरी नहीं, यह इबादत खुदा की है
ऐ बेख़बर ! जज़ा[10] की तमन्ना भी छोड़ दे
अच्छा है दिल के साथ रहे पासबाने-अक़्ल[11]
लेकिन कभी-कभी इसे तनहा भी छोड़ दे

☆ ☆ ☆

---

1. श्रृंगार 2. घमंडी 3. आकांक्षा 4. धर्मोपदेशक 5. पूर्ण त्याग 6. परलोक 7. अनुकरण 8. विधि 9. पथ-प्रदर्शक 10. प्रतिफल 11. बुद्धिरूपी रक्षक।

ज़माना देखेगा जब मेरे दिल से महशर[1] उट्ठेगा गुफ़्तगू का
मेरी ख़मोशी नहीं है, गोया मज़ार[2] है हर्फ़े-आरज़ू[3] का
जो मौजे-दरिया लगी यह कहने सफ़र से क़ायम है शान मेरी
गुहर[4] यह बोला सदफ़-नशीनी[5] है मुझको सामान आबरू का
न हो तबीयत ही जिनकी क़ाबिल वो तरबियत में नहीं संवरते
हुआ न सरसब्ज़ रहके पानी में अक्से-सरू-ए-किनारे-जू[6] का
कोई दिल ऐसा नज़र न आया, न जिसमें ख़्वाबीदा[7] हो तमन्ना
इलाही तेरा जहान क्या है, निगारख़ाना[8] है आरज़ू का
अगर कोई शै नहीं है पिनहां[9] तो क्यों सरापा तलाश हूं मैं
निगह को नज़्ज़ारे की तमन्ना है, दिल को सौदा है जुस्तजू का

☆ ☆ ☆

यूं तो ऐ बज़्में-जहां ! दिलकश थे हंगामे तेरे
इक ज़रा अफ़सुर्दगी[10] तेरे तमाशाओं में थी
पा गई आसूदगी[11] कू-ए-मोहब्बत[12] में वो ख़ाक
मुद्दतों आवारा जो हिकमत[13] के सहराओं में थी
किस क़दर ऐ मय ! तुझे रस्मे-हिजाब[14] आई पसंद
पर्दा-ए अंगूर से निकली तो मीनाओं[15] में थी
हुस्न की तासीर[16] पर ग़ालिब आ सकता था इल्म
इतनी नादानी जहां के सारे दानाओं में थी

---

1. प्रलय (क़ब्रों में से मुर्दे उठाने का दिन) 2. क़ब्र 3. आकांक्षाओं 4. मोती 5. सीपी में रहना 6. नदी किनारे के सर्व (वृक्ष) की परछाईं 7. सोई हुई 8. चित्रशाला 9. गुप्त 10. उदासी 11. सम्पन्नता, तुष्टि 12. प्रेम की गली 13. दर्शन 14. पर्दे में रहने की प्रथा 15. मद्य रखने का पात्र 16. प्रभाव।

मुझे फूंका है सोज़े-क़तरा-ए-अश्के-मोहब्बत[1] ने
ग़ज़ब की आग थी पानी के छोटे से शरारे में
नहीं जिन्से-सवाबे-आख़िरत[2] की आरज़ू मुझको
वो सौदागर हूं, मैंने नफ़अ़ देखा है ख़सारे में
सकूं-नाआशना[3] रहना उसे सामाने-हस्ती[4] है
तड़प किस दिल की यारब छुपके आ बैठी है पारे में

☆ ☆ ☆

ग़रज़ निशात[5] है शग़ले-शराब से जिनको
हलाल चीज़ को गोया हराम करते हैं
भला निभेगी तेरी हमसे क्योंकर ऐ वाइज़
कि हम तो रस्मे-मोहब्बत[6] को आम करते हैं
मैं उनकी महफ़िले-इशरत[7] से कांप जाता हूं
जो घर को फूंक के दुनिया में नाम करते हैं

☆ ☆ ☆

ज़माना आया है बेहिजाबी[8] का, आ़म दीदारे-यार[9] होगा
सकूत[10] था पर्दादार जिसका वो राज़ अब आशकार[11] होगा
गुज़र गया अब वो दौरे-साक़ी कि छुपके पीते थे पीने वाले
बनेगा सारा जहान मैख़ाना, हर कोई बादा-ख़्वार[12] होगा

---

1. प्रेम की बही हुई आँसू की बूंद की तपिश 2. पुण्य द्वारा परलोक में मिलने वाली वस्तुओं 3. शान्ति से अनभिज्ञ (अशान्त) 4. जीवन का साधन 5. आनन्द 6. प्रेम-कथा 7. ऐश्वर्य-विलास की महफ़िल 8. आवरण उठाने का 9. प्यारे के दर्शन 10. चुप्पी 11. प्रकट 12. शराबी।

किया मेरा तज़करा जो साक़ी ने बादाख़्वारों की अंजुमन में।
तो पीरे-मैख़ाना[1] सुनके कहने लगा कि मुंहफट है ख़्वार होगा॥
दियारे-मग़रिब[2] के रहने वालो खुदा की बस्ती दुकां नहीं है।
खरा जिसे तुम समझ रहे हो वो अब ज़रे-कम-अयार होगा॥
तुम्हारी तहज़ीब अपने ख़ंजर से आप ही खुदकुशी करेगी॥
जो शाख़े-नाजुक पे आशियाना बनेगा नापायदार[3] होगा॥
चमन में लाला[4] दिखाता फिरता है दाग़ अपना कली-कली को।
यह जानता है कि इस दिखावे से दिलजलों में शुमार होगा॥
जो एक था ऐ निगाह ! तूने हज़ार करके हमें दिखाया।
यही अगर क़ैफ़ियत[5] है तेरी तो फिर किसे एतबार होगा ?
खुदा के आशिक़ तो हैं हज़ारों, बनों में फिरते हैं मारे-मारे।
मैं उसका बंदा बनूंगा जिसको ख़ुदा के बंदों से प्यार होगा॥
न पूछ 'इक़बाल' का ठिकाना, अभी वही कैफ़ियत है उसकी।
कहीं सरे-रहगुज़ार[6] बैठा सितमकशे-इन्तज़ार[7] होगा॥

☆ ☆ ☆

यह मौजे-परेशां-ख़ातिर[8] को पैग़ाम लबे-साहिल[9] ने दिया।
है दूर विसाले-बहर[10] अभी, तू दरिया से घबरा भी गई॥

---

1. शराबख़ाने का स्वामी 2. पश्चिमी देशों 3. क्षणभंगुर 4. एक फूल का नाम 5. स्थिति 6. मार्ग में 7. प्रतीक्षा का मारा हुआ 8. व्याकुल लहर 9. तट 10. समुद्र से मिलन।

इज़्ज़त है मोहब्बत की क़ायम ऐ क़ैस[1] ! हिजाबे-महमिल[2] से।
महमिल जो गया इज़्ज़त भी गई, ग़ैरत भी गई, लैला भी गई॥
की तर्क तगो-दौ[3] क़तरे ने, तो आबरू-ए-गौहर[4] भी मिली।
आवारगी-ए-फ़ितरत[5] भी गई और कश्मकशे-दरिया भी गई॥
निकली तो लबे-इक़बाल से है क्या जानिये किसकी है यह सदा।
पैग़ामे-सुकूं[6] पहुंचा भी गई, दिल महफ़िल का तड़पा भी गई॥

☆ ☆ ☆

फिर बादे-बहार[7] आई, 'इक़बाल' ग़ज़लख़्वां[8] हो।
गुंचा[9] है अगर गुल हो, गुल हो तो गुलिस्तां हो॥
तू ख़ाक की मिट्टी है, अजज़ा[10] की हरारत[11] से।
बरहम हो, परेशां हो, वुसअ़त[12] में बयाबां हो॥
तू जिन्से-मोहब्बत है क़ीमत है गिरां[13] तेरी।
कम-माया[14] हैं सौदागर इस देश में अर्ज़ां हो[15]॥
सामां की मोहब्बत में मुज़मिर[16] है तन-आसानी।
मक़सद है अगर मंज़िल, ग़ारतगरे-सामां[17] हो॥

☆ ☆ ☆

---

1. लैला का आशिक़ (मजनू) 2. ऊँट पर कसने का कजावा जिसमें परदा डालकर स्त्रियां बैठती हैं 3. दौड़-धूप छोड़ दी 4. मोती की प्रतिष्ठा 5. भटकने की प्रकृति 6. शान्ति का सन्देश 7. वसन्त ऋतु की हवा 8. गीत गाओ 9. कली 10. तत्वों 11. गर्मी 12. फैलाव 13. महँगी 14. थोड़ी पूँजी वाले 15. रास्ता 16. निहित 17. सामान को नष्ट करने वाला।

कभी ऐ हक़ीक़ते-मुन्तज़र[1] नज़र आ लिबासे-मजाज़[2] में।
कि हज़ारों सिजदे तड़प रहे हैं मेरी जबीने-नियाज़[3] में॥
तू बचा-बचा के न रख इसे, तेरा आईना है वो आईना।
कि शिकस्ता[4] हो तो अज़ीज़तर[5] है निगाहे-आईनासाज़[6] में॥
न कहीं जहां में अमां[7] मिली, जो अमां मिली तो कहां मिली ?
मेरे जुर्मे-ख़ासना-ख़राब को तेरे अफ़्वे-बन्दा-नवाज़[8] में॥
न वो इश्क़ में रहीं गर्मियां न वो हुस्न में रहीं शोख़ियां।
न वो ग़ज़नवी में तड़प रही न वो ख़म[9] है ज़ुल्फ़े-अयाज़[10] में॥
जो मैं सर-ब-सिजदा[11] हुआ कभी तो ज़मीं से आने लगी सदा।
तेरा दिल तो है सनम-आशना[12] तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में ?

☆ ☆ ☆

आह दुनिया दिल समझती है जिसे वो दिल नहीं।
पहलू-ए-इन्सां में इक हंगामा-ए-ख़ामोश है॥

☆ ☆ ☆

हुस्न हो क्या ख़ुदनुमा[13] जब कोई माइल[14] ही न हो।
शम्मअ़ को जलने से क्या मतलब, जो महफ़िल ही न हो॥

---

1. एक प्रतीक्ष्य ईश्वरीय प्रेम 2. अवास्तविक अर्थात् सांसारिक प्रेम के लिबास में 3. प्रेमी का माथा 4. टूट जाए 5. अधिक प्रिय 6. आईना बनाने वाले की नज़र 7. पनाह 8. क्षमाशीलता तथा कृपा 9. पेच 10 अयाज़ (ग़ज़नवी का प्रिय दास) 11. ईश्वर के सम्मुख नतमस्तक 12. बुतों का उपासक 13. आत्मप्रदर्शक 14. आकृष्ट (प्रशंसक)।

अजब वाइज़ की दींदारी[1] है यारब।
अदावत है उसे सारे जहां से॥
कोई अब तक न यह समझा कि इन्सां।
कहां जाता है आता है कहां से॥
बड़ी बारीक हैं वाइज़ की चालें।
लरज़[2] जाता है आवाज़े-अज़ां से॥

☆ ☆ ☆

बिठा के अ़र्श[3] पे रक्खा है तूने ऐ वाइज़।
खुदा वो क्या है जो बंदों से एहतिराज़ करे[4]॥
मेरी निगाह में वो रिंद[5] ही नहीं साक़ी।
जो होशियारी-ओ-मस्ती में इम्तियाज़[6] करे॥

☆ ☆ ☆

तेरा, ऐ क़ैस, क्योंकर हो गया सोज़े-दरूं[7] ठंडा ?
कि लैला में तो है अब तक वही अन्दाज़े-लैलाई॥

☆ ☆ ☆

हैं जज़्बा-बाहमी[8] से क़ायम निज़ाम[9] सारे।
पोशीदा[10] है यह नुक़्ता तारों की ज़िन्दगी में॥

---

1. धार्मिकता 2. कांप 3. आकाश-सिंहासन 4. परहेज़ करे 5. मद्यप 6. भेद-भाव 7. प्रेम की ज्वाला 8. पारस्परिक मेल-मिलाप 9. व्यवस्थाएं 10. निहित।

हास्य-रस

मशरिक़ में उसूले-दीन[1] बन जाते हैं।
मग़रिब में मगर मशीन बन जाते हैं॥
रहता नहीं एक भी हमारे पल्ले।
वां एक के तीन-तीन बन जाते हैं॥

☆ ☆ ☆

शैख़ साहब भी तो परदे के कोई हामी नहीं।
मुफ़्त में कालिज के लड़के उनसे बदज़न हो गये॥
वाज़[2] में फ़र्मा दिया कल आपने यह साफ़-साफ़।
पर्दा आख़िर किससे हो जब मर्द ही ज़न[3] हो गये॥

☆ ☆ ☆

तालीमे-मग़रिबी है बहुत जुरअत-आफ़रीं[4]।
पहला सबक़ है बैठ के कालेज में मार डींग॥
बसते हैं हिन्द में जो ख़रीदार ही फ़क़त।
आग़ा[5] भी लेके आते हैं अपने वतन से हींग॥
मेरा यह हाल, बूट की 'टो' चाटता हूं मैं।
उनका यह हुक्म देख! मेरे फ़र्श पर न रींग॥

☆ ☆ ☆

1. धर्म के नियम 2. धर्मोपदेश 3. स्त्रियां 4. साहस के लिए प्रशंसनीय 5. पठान।

थे वो भी दिन कि ख़िदमते-उस्ताद[1] के एवज़[2]।
दिल चाहता था हदिया-ए-दिल[3] पेश कीजिये॥
बदला ज़माना ऐसा कि लड़का पस-अज़ सबक़[4]।
कहता है मास्टर से कि "बिल पेश कीजिए"॥

☆ ☆ ☆

इन्तिहा भी इसकी है आख़िर ख़रीदें कब तलक ?
छतरियां, रूमाल, मफ़लर, पैरहन जापान से॥
अपनी ग़फ़लत[5] की यही हालत अगर क़ायम रही।
आयेंगे ग़स्साल[6] काबुल से, कफ़न जापान से॥

☆ ☆ ☆

हम मशरिक़ के मसकीनों[7] का दिल मग़रिब में जा अटका है।
वां कंटर सब बिल्लौरी हैं यां एक पुराना मटका है॥
इस दौर में सब मिट जायेंगे, हां बाक़ी वो रह जायेगा।
जो क़ायम अपनी राह पे है और पक्का अपनी हट का है॥
यां बाहम प्यार के जलसे थे, दस्तूरे-मोहब्बत क़ायम था।
यां बहस में उर्दू-हिन्दी है यां क़ुरबानी या झटका है॥

☆ ☆ ☆

वो मिस बोली इरादा खुदकशी का जब किया मैंने।
मुहज़्ज़ब[8] है तू ऐ आ़शिक़ ! क़दम बाहर न धर हद से॥

---

1. गुरुसेवा 2. बदले में 3. दिल की भेंट 4. पाठ लेने के बाद 5. लापरवाही 6. मुर्दे को नहलाने वाले 7. निवासियों 8. सभ्य।

न जुरअत है, न ख़ंजर है, तो क़सदे-खुदकुशी[1] कैसा ?
यह माना दर्दे-नाकामी गया तेरा गुज़र हद से ॥
कहा मैंने कि ऐ जाने-जहां[2] कुछ नक़द दिलवा दो।
किराये पर मंगा लूंगा ·कोई अफ़ग़ान सरहद से ॥

☆ ☆ ☆

मेम्बरी इम्पीरियल कौंसिल की कुछ मुश्किल नहीं।
वोट तो मिल जायेंगे पैसे भी दिलवायेंगे क्या ?
मीरज़ा 'ग़ालिब' खुदा बख़्शे, बजा फ़र्मा गये।
हमने यह माना कि दिल्ली में रहें, खायेंगे क्या ?

☆ ☆ ☆

रात मच्छर ने कह दिया मुझसे।
माजरा अपनी नातमामी का ॥
मुझको देते हैं एक बूंद लहू।
सिला[3] शब-भर की तश्नाकामी[4] का ॥
और यह बस्वादार बे-ज़हमत[5]।
पी गया सब लहू असामी का ॥

☆ ☆ ☆

जान जाये हाथ से जाये न सत।
है यही इक बात हर मज़हब का तत ॥
चट्टे-बट्टे एक ही थैली के हैं।
साहूकारी, बिस्वादारी, सल्तनत ॥

☆ ☆ ☆

---

1. आत्महत्या का संकल्प 2. संसार के प्राण (प्रेयसी) 3. पारितोषिक 4. पिपासा
5. बिना किसी कष्ट, चेष्टा के।

सुना है मैंने कल यह गुफ़्तगू थी कारख़ाने में।
पराये झोंपड़ों में है ठिकाना दस्तकारों का॥
मगर सरकार ने क्या खूब कौंसिल-हाल बनवाया।
कोई इस शहर में तकिया[1] न था सरमायादारों का॥

☆ ☆ ☆

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमां की हरारत[2] वालों ने।
मन अपना पुराना पापी है बरसों में नमाज़ी बन न सका॥
तर आंखें तो हो जाती हैं पर क्या लज़्ज़त[3] इस रोने में?
जब खूने-जिगर[4] की आमेज़िश[5] से अश्क[6] पियाज़ी[7] बन न सका॥
'इक़बाल' बड़ा उपदेशक है मन बातों में मोह लेता है।
गुफ़्तार[8] का यह ग़ाज़ी[9] तो बना किरदार[10] का ग़ाज़ी बन न सका॥

---

1. ठिकाना (सहारा) 2. जिनके मन में धर्म का उग्र प्रेम था 3. आनन्द 4. हृदय-रक्त 5. मिश्रण 6. आँसू 7. गुलाबी 8. वार्ता 9. धर्मयोद्धा 10. आचरण, कर्म, चरित्र।

दर्शन-सम्बन्धी

तेरे शीशे[1] में मय बाक़ी नहीं है।
बता क्या तू मेरा साक़ी नहीं है ?
समन्दर से मिले प्याले को शबनम[2]।
बख़ीली[3] है यह रज़्ज़ाक़ी[4] नहीं है ?

☆ ☆ ☆

अगर कजरौ[5] हैं अंजुम[6], आस्मां तेरा है या मेरा ?
मुझे फ़िक्रे-जहां[7] क्यों हो, जहाँ तेरा है या मेरा ?
मोहम्मद भी तेरा जिब्रील[8] भी क़ुरआन भी तेरा।
मगर यह हर्फ़े-शीरीं[9] तर्जुमां[10] तेरा है या मेरा ?

☆ ☆ ☆

गेसू-ए-तावदार[11] को और भी तावदार कर।
होशो-ख़िरद[12] शिकार कर क़ल्बो-नज़र[13] शिकार कर॥
इश्क़ भी हो हिजाब[14] में, हुस्न भी हो हिजाब में।
या तो खुद आशकार[15] हो या मुझे आशकार कर॥

---

1. बोतल 2. एक बूंद अर्थात् बहुत कम 3. कंजूसी 4. जीविका प्रदान करना 5. टेढ़े चलने वाले 6. सितारे 7. संसार की चिन्ता 8. रहमत का फ़रिश्ता 9. मीठा बोल 10. अनुवादक (प्रस्तुतकर्ता) 11. चमकीले केशों 12. बुद्धि 13. मन, मस्तक 14. आवरण 15. प्रकट।

तू है मुहीते-बेकरां[1], मैं हूं ज़रा-सी आबे-जू[2]।
या मुझे हमकिनार[3] कर, या मुझे बेकिनार[4] कर ॥
बाग़े-बहिश्त से मुझे हुक्मे-सफ़र दिया था क्यों ?
कारे-जहां[5] दराज़[6] है अब मेरा इंतज़ार कर ॥
रोज़े-हिसाब[7] जब मेरा पेश हो दफ़्तरे-अ़मल[8]।
आप भी शर्मसार हो मुझको भी शर्मसार कर ॥

☆ ☆ ☆

मेरी जफ़ा-तलबी[9] को दुआयें देता है।
वो दश्ते-सादा[10] वो तेरा जहाने-बेबुनियाद ॥
ख़तरपसंद[11] तबीयत को साज़गार[12] नहीं।
वो गुलिस्तां कि जहां घात में न हो सय्याद[13] ॥
मुक़ामे-शौक़[14] तेरे क़ुदसियों[15] के बस का नहीं।
उन्हीं का काम है यह जिनके हौसले हैं ज़ियाद ॥

☆ ☆ ☆

क्या इश्क़ एक ज़िन्दगी-ए-मुस्तआ़र[16] का !
क्या इश्क़ पायदार[17] से नापायदार[18] का ! !

---

1. अथाह सागर 2. छोटी नदी 3. अपने से मिला ले 4. विशाल (बेकिनारा) 5. संसार के काम 6. लम्बे 7. प्रलय के बाद का वह दिन जब मनुष्य अपने कर्मों का हिसाब भगवान को देगा 8. कर्मों का पोथा 9. अत्याचार सहने की शक्ति 10. सादा जंगल 11. ख़तरों को पसन्द करने वाली 12. अनुकूल 13. शिकारी 14. मंज़िल पर पहुँचना 15. फ़रिश्तों 16. मांगे का जीवन 17. अमर 18. नश्वर।

वो इश्क़ जिसकी शम्मअ़ बुझा दे अज़ल[1] की फूंक।
उसमें मज़ा नहीं तपिशो-इन्तज़ार[2] का॥
मेरी बिसात[3] क्या है ताबो-ताबे-यक-नफ़स[4]।
शो'ले से बेमहल[5] है उलझना शरार[6] का॥
कर पहले मुझको ज़िन्दगी-ए-जाविदां[7] अ़ता[8]।
फिर ज़ौक़-ओ-शौक़ देख दिले-बेक़रार का॥

☆ ☆ ☆

दिगरगूं[9] है जहां तारों की गर्दिश तेज़ है साक़ी।
दिल हर ज़र्रा में ग़ोग़ा-ए-रस्ताख़ेज़[10] है साक़ी॥
मताअ़-ए-दीन-ओ-दानिश[11] लुट गई अल्लाह वालों की।
यह किस काफ़िर-अदा[12] का ग़मज़हे-ख़ूंरेज़[13] है साक़ी ?
वही देरीना[14] बीमारी, वही नामहकमी[15] दिल की।
इलाज उसका वही आबे-निशात-अंगेज़[16] है साक़ी॥
नहीं है नाउमीद 'इक़बाल' अपनी किश्ते-वीरां[17] से।
ज़रा नम हो तो यह मिट्टी बड़ी ज़रख़ेज़ है साक़ी॥

---

1. मृत्यु 2. जलने और प्रतीक्षा करने 3. अस्तित्व 4. एक श्वास की चमक और गर्मी 5. व्यर्थ 6. चिंगारी 7. अमर जीवन 8. प्रदान 9. परिवर्तित 10. प्रलय का शोर 11. बुद्धि तथा धर्म की पूँजी 12. चंचल सुन्दरी 13. रक्त बहाने वाला कटाक्ष 14. पुरानी 15. दुर्बलता 16. आनन्ददायक जल (शराब) 17. उजड़ा खेत।

परेशां होके मेरी ख़ाक आख़िर दिल न बन जाये।
जो मुश्किल अब है यारब फिर वही मुश्किल न बन जाये॥
कभी छोड़ी हुई मंज़िल भी याद आती है राही को।
खटक-सी है जो सीने में ग़मे-मंज़िल न बन जाये॥
बनाया इश्क़ ने दरिया-ए-नापेदाकरां[1] मुझको।
यह मेरी खुद-निगहदारी[2] मेरी साहिल न बन जाये॥
उरूजे-आदमे-ख़ाकी[3] से अंजुम[4] सहमे जाते हैं।
कि यह टूटा हुआ तारा महे-कामिल[5] न बन जाये॥

☆ ☆ ☆

मताअ़-ए-बेबहा[6] है दर्दो-सोज़े-आरज़ूमंदी।
मक़ामे-बंदगी[7] देकर न लूं शाने-खुदावंदी॥
यहां मरने की पाबंदी, वहां जीने की पाबंदी।
मेरी मश्शातगी[8] की क्या ज़रूरत हुस्ने-मानी[9] को ?
कि फ़ितरत खुद-ब-खुद करती है लाले की हिनाबंदी[10]॥

☆ ☆ ☆

ख़िरद[11] वाक़िफ़ नहीं है नेको-बद से।
बढ़ी जाती है ज़ालिम अपनी हद से॥

---

1. ऐसी नदी जिसका किनारा नहीं (विशाल) 2. आत्मरक्षा 3. धरती पर रहने वाले मनुष्य के उत्थान 4. सितारे 5. पूरा चाँद 6. अमूल्य पूँजी 7. भक्ति-स्थान 8. शृंगार 9. विश्व-सौन्दर्य 10. मेहंदी रचाना 11. बुद्धि।

खुदा जाने मुझे क्या हो गया है।
ख़िरद बेज़ार दिल से, मैं ख़िरद से॥

☆ ☆ ☆

अपनी जौलांगाह[1] ज़ेरे-आस्मां[2] समझा था मैं।
'आबो-गिल[3] के खेल को अपना जहां समझा था मैं॥
बेहिजाबी[4] से तेरी टूटा निगाहों का तिलिस्म[5]।
इक रिदा-ए-नीलगूं[6] को आस्मां समझा था मैं॥
कारवां थककर फ़ज़ा[7] के पेचो-ख़म में रह गया।
मेहरो-माहो-मुश्तरी[8] को हमइना[9] समझा था मैं॥
इश्क़ की इक जस्त[10] ने तै कर दिया क़िस्सा तमाम।
इस ज़मीनो-आस्मां को बेकरां[11] समझा था मैं॥
थी किसी दरमांदा-रहरौ[12] की सदा-ए-दर्दनाक[13]।
जिसको आवाज़े-रहीले-कारवां[14] समझा था मैं॥

☆ ☆ ☆

समा सकता नहीं पहना-ए-फ़ितरत[15] में मेरा सौदा[16]।
ग़लत था ऐ जुनूं[17] शायद तेरा अंदाज़ा-ए-सहरा[18]॥

---

1. घूमने-फिरने की जगह 2. आकाश के नीचे 3. पानी-मिट्टी 4. परदा हटने से 5. जादू 6. नीली चादर 7. शून्य 8. सूरज, चाँद तथा बृहस्पति तारा 9. सहगामी 10. छलाँग 11. अथाह 12. दुःखी पथिक 13. दर्दभरी आवाज़ 14. कारवां के गुज़रने की लोचदार आवाज़ 15. प्रकृति की विशालता 16, 17. उन्माद 18. मरुस्थल (संसार) की विशालता का अनुमान।

खुदी[1] से इस तिलिस्मे-रंगो-बू[2] को तोड़ सकते हैं।
यही तौहीद[3] थी जिसको न तू समझा न मैं समझा॥
निगह[4] पैदा कर ऐ ग़ाफ़िल ! तजल्ली[5] ऐन फ़ितरत[6] है।
कि अपनी मौज[7] से बेगाना रह सकता नहीं दरिया॥
बहुत देखे हैं मैंने मशरिक़ो-मग़रिब के मैख़ाने।
यहां साक़ी नहीं पैदा वहां बेज़ौक़ है सहबा[8]॥
हुज़ूरे-हक़ में[9] इसराफ़ील[10] ने मेरी शिकायत की।
यह बंदा वक्त से पहले क़यामत कर न दे बर्पा॥
वही है साहिबे-इमरोज़[11] जिसने अपनी हिम्मत से।
ज़माने के समन्दर से निकाला गौहरे-फ़र्दा[12]॥

☆ ☆ ☆

हुस्ने-बेपरवा को अपनी बेनक़ाबी के लिए।
हों अगर शहरों से बन प्यारे तो शहर अच्छे कि बन ?
अपने मन में डूब कर पा जा सुराग़े-ज़िन्दगी[13]।
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन, अपना तो बन॥
मन की दौलत हाथ आती है तो फिर जाती नहीं।
तन की दौलत छांव है आता है धन जाता है धन॥

---

1. अहंभाव 2. रंग तथा सुगंधि का जादू अर्थात् संसार 3. एकेश्वरवाद 4. नज़र 5. आलोक, दीप्ति 6. मानव-प्रकृति के बिल्कुल अनुकूल 7. लहर 8. सुरा 9. भगवान से 10. एक फ़रिश्ता जो प्रलय के दिन शंख बजाकर घोषणा करेगा 11. आज (समय) का बादशाह 12. आनेवाले कल का मोती (कल को पहचान लिया) 13. जीवन का भेद।

मन की दुनिया में न पाया मैंने अफ़रंगी का राज़।
मन की दुनिया में न देखे मैंने शैख़-ओ-बिरहमन॥
पानी-पानी कर गई मुझको क़लन्दर की यह बात।
तू झुका जब ग़ैर के आगे न मन तेरा न तन॥

☆ ☆ ☆

अक़्ल गो आस्तां[1] से दूर नहीं।
उसकी तक़दीर में हुज़ूर[2] नहीं॥
दिले-बीना[3] भी कर ख़ुदा से तलब।
आंख का नूर दिल का नूर नहीं॥
इल्म में भी सरूर है लेकिन।
यह वो जन्नत है जिसमें हूर नहीं॥
इक जुनूं[4] है कि बाशऊर[5] भी है।
इक जुनूं है कि बाशऊर नहीं॥
नासुबूरी[6] है ज़िन्दगी दिल की।
आह ! वो दिल कि नासुबूर नहीं॥
बेहुज़ूरी है तेरी मौत का राज़।
ज़िन्दा हो तू तो बेहुज़ूर नहीं॥
हर गुहर[7] ने सदफ़[8] को तोड़ दिया।
तू ही आमादा-ए-ज़हूर[9] नहीं॥

---

1. चौखट (दहलीज़) 2. भगवान 3. देखने वाला दिल (पारखी) 4. उन्माद 5. विवेकपूर्ण 6. बेसब्री 7. मोती 8. सीपी 9. प्रत्यक्ष रूप से सामने आने के लिए तैयार।

ये पयाम दे गई है मुझे बादे-सुबहगाही[1]।
कि ख़ुदी के आरिफ़ों[2] का है मक़ाम पादशाही॥
तेरी ज़िन्दगी इसी से, तेरी आबरू इसी से।
जो रही ख़ुदी तो शाही, न रही तो रूसियाही[3]।
न दिया निशाने-मंज़िल मुझे ऐ हकीम[4] तूने॥
मुझे क्या गिला हो तुझसे तू न रहनशीं[5] न राही॥

☆ ☆ ☆

ख़िरद[6] के पास ख़बर के सिवा कुछ और नहीं।
तेरा इलाज नज़र के सिवा कुछ और नहीं॥
हर इक मक़ाम से आगे मक़ाम है तेरा।
हयात ज़ौक़े-सफ़र के सिवा कुछ और नहीं॥

☆ ☆ ☆

न तू ज़मीं के लिए है न आस्मां के लिए।
जहां है तेरे लिए तू नहीं जहां के लिए॥
रहेगा रावी-ओ-नील-ओ-फ़रात[7] में कब तक ?
तेरा सफ़ीना[8] कि है बहरे-बेकरां[9] के लिए॥
ज़रा-सी बात थी अन्देशा-ए-अज़म[10] ने उसे।
बढ़ा दिया है फ़क़त ज़ेबे-दास्तां[11] के लिए॥

---

1. सुबह की हवा 2. पहचाननेवालों 3. मुँह काला होगा 4. दार्शनिक 5. रास्ते में रहने वाला 6. बुद्धि 7. नदियों के नाम (अर्थात् सीमाओं में) 8. नाव 9. अथाह सागर 10. उन लोगों की शंका ने जो अरब-निवासी (धार्मिक) नहीं हैं 11. कथा को सुन्दर बनाने।

न बादा[1] है न सुराही न दौरे-पैमाना।
फ़क़त निगाह से रंगीं है बज़्मे ज़ानाना[2] ॥

☆ ☆ ☆

वो बंदगी ख़ुदाई, वो बंदगी गदाई[3]।
या बंदाए-खुदा बन या बंदा-ए-ज़माना ॥
ग़ाफ़िल न हो, खुदी से कर अपनी पासबानी[4]।
शायद किसी हरम[5] का तू भी है आस्ताना[6] ॥

☆ ☆ ☆

हुई न आम जहां में कभी हुकूमते-इश्क़।
सबब यह है कि मोहब्बत ज़मानासाज़ नहीं।

☆ ☆ ☆

फ़ारिग़ तो न बैठेगा महशर[7] में जुनूं[8] मेरा।
या अपना गिरेबां चाक या दामने-यज़दां[9] चाक ॥

☆ ☆ ☆

यहीं बहिश्त भी है हूरो-जिब्रील[10] भी हैं।
तेरी निगह में अभी शोख़ी-ए-नज़ारा नहीं ॥

☆ ☆ ☆

तेरी बन्दापरवरी से मेरे दिन गुज़र रहे हैं।
न गिला है दोस्तों का न शिकायते-ज़माना ॥

---

1. शराब 2. प्रेयसी की बैठक (संसार) 3. फ़कीरी 4. रक्षा 5. काबे के इर्द-गिर्द का प्रान्त (पवित्र स्थान) 6. दहलीज़ 7. वह दिन जब ख़ुदा सबका न्याय करेगा 8. उन्माद 9. ख़ुदा का दामन 10. एक फ़रिश्ता।

ऐ तायरे-लाहूती[1] उस रिज़्क़[2] से मौत अच्छी।
जिस रिज़्क़ से आती हो परवाज़[3] में कोताही[4]॥

☆ ☆ ☆

मुझे आहो-फ़ुग़ाने-नीमशब[5] का फिर पयाम आया।
थम ऐ रहरो[6] कि शायद फिर कोई मुश्किल मक़ाम आया॥
ज़रा तक़दीर की गहराइयों में डूब जा तू भी।
कि इस जंगाह[7] से मैं बन के तेग़े-बेनियाम[8] आया॥
यह मिसरा[9] लिख दिया किस शोख़ ने महराबे-मस्जिद पर।
ये नादां गिर गये सिजदों में जब वक़्ते-क़याम[10] आया॥
चल ऐ मेरी ग़रीबी का तमाशा देखने वाले।
वो महफ़िल उठ गई जिस दम कि मुझ तक दौरे-जाम आया॥

☆ ☆ ☆

यक़ीं पैदा कर ऐ नादां, यक़ीं से हाथ आती है।
वो दरवेशी[11] कि जिसके सामने झुकती है फ़ग़फ़ूरी[12]॥
हदे-इदराक[13] से बाहर हैं बातें इश्क़ो-मस्ती की।
समझ में इस क़दर आया कि दिल की मौत है दूरी॥

☆ ☆ ☆

उस मौज के मातम में रोती है भंवर की आंख।
दरिया से उठी लेकिन साहिल से न टकराई॥

---

1. शून्य (आकाश) में उड़ने वाले पक्षी 2. रोटी (दाना) 3. उड़ान 4. कमी 5. आधी रात में भरी गई आहों का 6. पथिक 7. युद्धभूमि 8. नंगी तलवार 9. पंक्ति 10. रुकने का समय 11. फ़क़ीरी 12. बादशाही (फ़ग़फ़ूर—चीन के प्राचीन बादशाहों के नाम) 13. बुद्धि की सीमा।

सितारों से आगे जहां और भी हैं।
अभी इश्क़ के इम्तिहां और भी हैं॥
तिही[1] ज़िन्दगी से नहीं ये फ़ज़ायें[2]।
यहां सैकड़ों कारवां और भी हैं॥
अगर खो गया इक नशेमन[3] तो क्या ग़म ?
मक़ामाते-आहो-फ़ुग़ां[4] और भी हैं॥
तू शाहीं[5] है, परवाज़[6] है काम तेरा।
तेरे सामने आस्मां और भी हैं॥
इसी रोज़ो-शब[7] में उलझकर न रह जा।
कि तेरे ज़मानो-मकां[8] और भी हैं॥
गये दिन कि तनहा था मैं अंजुमन में।
यहां अब मेरे राज़दां[9] और भी हैं॥

☆ ☆ ☆

मीरी[10] में, ग़रीबी में, शाही में, ग़ुलामी में।
कुछ काम नहीं बनता बेजुरअत-ए-रिन्दाना[11]॥

☆ ☆ ☆

साहिबे-साज़[12] को लाज़िम है कि ग़ाफ़िल न रहे।
गाहे-गाहे[13] ग़लतआहंग[14] भी होता है सुरोश[15]॥

---

1. ख़ाली 2. वातावरण 3. नीड़ 4. आर्तनाद के लिए स्थान (अवसर) 5. बाज़ पक्षी 6. उड़ना 7. दिन-रात (संसार) 8. संसार 9. भेदी 10. अमीरी 11. उन्मादपूर्ण साहस के बिना 12. साज़ वाले 13. कभी-कभी 14. ग़लत इरादा लिए 15. अच्छा सन्देश लाने वाला फ़रिशता।

इश्क़ तेरी इंतिहा, इश्क़ मेरी इंतिहा।
तू भी अभी नातमाम मैं भी अभी नातमाम॥

☆ ☆ ☆

उसकी खुदी[1] है अभी शामो-सहर[2] में असीर[3]।
गर्दिशे-दौरां[1] का है जिसकी ज़बान पर गिला॥

☆ ☆ ☆

जुलमे-बहर[5] में खोकर संभल जा।
तड़प जा, पेच खा-खाकर बदल जा॥
नहीं साहिल तेरी क़िस्मत में ऐ मौज[6]।
उभरकर जिस तरह चाहे निकल जा॥

☆ ☆ ☆

तेरे सीने में दम है दिल नहीं है।
तेरा दम गर्मी-ए-महफ़िल नहीं है॥
गुज़र जा अक़्ल से आगे कि यह नूर।
चिरागे़-राह है मंज़िल नहीं है॥

☆ ☆ ☆

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी।
यह ख़ाकी[7] अपनी फ़ितरत[8] में न नूरी[9] है न नारी[10] है॥

☆ ☆ ☆

आग बुझी हुई इधर, टूटी हुई तनाब उधर।
क्या ख़बर इस मक़ाम से गुज़रे हैं कितने कारवां ?

□□

1. अहंभाव 2. सुबह-शाम 3. बन्दी 4. संसार-चक्र 5. समुद्र के अँधेरे में (गहराइयों में) 6. लहर 7. मिट्टी का पुतला (मनुष्य) 8. प्रकृति 9. दैवी 10. नारकीय।

काम है मेरा तग़य्युर नाम है मेरा शबाब
मेरा नारा 'इंकिलाब-ो-इंकिलाब-ो-इंकिलाब'

—जोश मलीहाबादी

पूछते हैं वो कि 'ग़ालिब' कौन है
कोई बतलाओ कि हम बतलाएँ क्या

—ग़ालिब

मोहब्बत की बोली

न उर्दू न हिन्दी न हिन्दुस्तानी
—हफ़ीज़ जालन्धरी

यूहीं फ़िराक़ ने अम्र बस

नया चश्मा है पत्थर के शिगाफ़ों से उबलने को
ज़माना किस क़दर बेताब है करवट बदलने को
—सरदार जाफ़री

ने तजुरबातो-हवादिस की शक्ल में
मुझे दिया है वो लौटा रहा हूं मैं



उर्दू के लोकप्रिय शायर

नागरी लिपि में उर्दू के लोकप्रिय शायरों व उनकी शायरी पर आधारित पहली सुव्यवस्थित पुस्तकमाला। इसमें मीर, गालिब से लेकर साहिर लुधियानवी-मजरूह सुलतानपुरी तक सभी प्रमुख उस्तादों और लोकप्रिय शायरों की चुनिंदा शायरी उनकी रोचक जीवनियों के साथ अलग-अलग पुस्तकों में प्रकाशित की गई हैं। इस पुस्तकमाला की प्रत्येक पुस्तक में संबंधित शायर के संपूर्ण लेखन से चयन किया गया है और प्रत्येक रचना के साथ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये गये हैं। इसका संपादन अपने विषय के दो विशेषज्ञ संपादकों–सरस्वती सरन कैफ व प्रकाश पंडित–से कराया गया है। अब तक इस पुस्तकमाला के अनगिनत संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और पाठकों द्वारा इसे सतत सराहा जा रहा है।

इक़बाल

उर्दू साहित्य में इक़बाल का स्थान रवीन्द्रनाथ टैगोर के समान है। वे जहां एक ओर चिंतनपरक और सूफ़ियाना शायरी के लिए मशहूर हैं, वहीं उन्होंने प्रकृति-चित्रण, राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति तथा सर्वधर्म सद्भाव को भी अपनी शायरी का विषय बनाया है। प्रगतिशील शायरी का झंडा सबसे पहले उन्हीं ने उठाया जो बाद में जोश, फ़िराक़, फैज़, साहिर आदि अनेक शायरों में पुष्पित-पल्लवित हुआ।

ISBN 81-7028-214-4
9798170282142
राजपाल
रु. 50/-